तृतीय अध्याय

''तत्वों के आधार पर 'हस्तक्षेप' उपन्यास की समीक्षा''

तृतीय अध्याय
''तत्त्वों के आधार पर 'हस्तक्षेप' उपन्यास की समीक्षा''

3.1 कथावस्तु -

उपन्यास में कथावस्तु का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। उपन्यास का प्राण कथावस्तु होती है। इसलिए उपन्यास के तत्त्वों में कथावस्तु का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

3.1.1 उपन्यास की कथावस्तु -

'हस्तक्षेप' श्रवणकुमार गोस्वामी जी की नवीनतम् कृति है। 'हस्तक्षेप' में आदिवासी जीवन को एक नए दृष्टिकोण से चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। आदिवासियों का जीवन पीड़ित, शोषित एवं दमित, अभावग्रस्त, असहनीय एवं उपेक्षित होने के कारण प्रगतिकामी रचनाकारों के लिए चिंतन का विषय रहा है। स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद आदिवासियों को संविधान में संरक्षण मिला और सरकार की ओर से विकास की मुख्यधारा में प्रवाहित करने के लिए विशेष प्रयास हुए। लेकिन खेद की बात यह है कि विकास के नाम पर जो लूट मची वह अब तक खत्म नहीं हो पायी। स्वतंत्र भारत के आदिवासी जीवन की बड़ी त्रासदी बन गई है। इसका मार्मिक चित्रण 'हस्तक्षेप' उपन्यास में गोस्वामीजी ने किया है।

'हस्तक्षेप' की पूरी कथावस्तु दो स्तरों पर चलती है। एक डॉ. महुआ चक्रवर्ती को केंद्र में रखकर और दूसरी करमा भगत को केंद्रबिंदू बनाकर। कथावस्तु की शुरूआत रोचक ढंग से की है। डॉ. महुआ चक्रवर्ती 'आदिवासी महिला छात्रावास' में नवनियुक्त अधीक्षिका बनकर आती है। साथ ही साथ वह रंगपुर विश्वविद्यालय में अध्यापिका है। महुआ छात्रावास की अधीक्षिका का कार्यभार इसलिए स्वीकारती है कि वहाँ की परिस्थिति अत्यंत कलुषित है। वह एक चुनौती समझकर वहाँ अधीक्षिका बनकर आती है। सबसे पहले महुआ आदिवासी छात्राओं के साथ आत्मीयतापूर्ण संबंध स्थापित करके छात्रावास को शिस्तबद्ध बनाने का प्रयास करती है। लूसी और कार्नेलिया जैसी कुमार्ग पर चलनेवाली छात्राओं को विश्वास में लेकर उन्हें सुधारने का मौका देती है। छात्रावास की लड़कियों को सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करने के लिए विधायक जी के

कार्यकर्ता (लंबू तथा मोटू) बुलाने आते हैं। तब महुआ छात्रावास की लड़कियों को कार्यक्रम में भेजने से इन्कार कर देती हैं। तब से महुआ को विधायक जी का रोष सहन करना पड़ता है। विधायक जी महुआ को प्रताड़ित करते हैं लेकिन महुआ उसके सामने झुकती नहीं। वह अपने निर्णय पर अटल रहती हैं। यहाँ से 'हस्तक्षेप' की कथावस्तु गतिशील बन जाती है।

कथावस्तु का दूसरा छोर करमा, नेताजी और विधायक जी से जुड़ा हुआ है। नेताजी और रहमत अली 'आदिवासी सांस्कृतिक विकास परिषद' की स्थापना करके आदिवासी संस्कृति के विकास के नाम पर लाखों रुपयों का अनुदान हड़पने का षड्यंत्र रचते हैं। जिसमें सीधे-साधे आदिवासियों की तरह करमा भगत उनके जाल में फँस जाता है। 'हस्तक्षेप' उपन्यास की मूल कथा महुआ, करमा, विधायकजी और नेताजी के इर्दगिर्द ही बुनी गई है। यहाँ बिरसी भगत महुआ और करमा के पिछे प्रेरणा शक्ति के रूप में खड़ी हैं।

'हस्तक्षेप' प्रायः आदिवासी संस्कृति के नाम पर व्यावसायिक बुद्धिजीवियों से स्वार्थलालसा के विरूद्ध सार्थक हस्तक्षेप है। आदिवासियों में आत्मसम्मान का भाव जाग्रत करके छात्रावास में महुआ अनुशासन कड़ा कर देती है। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आदिवासी लड़कियों को न जाने की सख्त पाबंदी की जाती है। महुआ आदिवासी नृत्य प्रस्तुत करने का विरोध करती है। वह कला को बाजारू रूप नहीं बनाने देती। नेताजी और रहमतअली 'आदिवासी सांस्कृतिक विकास परिषद' की स्थापना मुख्यमंत्री के हाथों से करके उनसे लाखों रुपयों का अनुदान हड़पना चाहते हैं। इसके लिए करमा भगत को अपने षड्यंत्र में फँसाते हैं। दिल्ली में गणतंत्र दिवस पर करमा के साथ दस युवक और युवतियों की नृत्य मंडली का दल भेजते हैं। परंतु इसके पीछे नेताजी की एक बड़ी साजिश होती है। संस्कृति विभाग के उच्च अधिकारी को खुश करने के लिए सोनी नाम की आदिवासी छात्रा का उपभोग करना चाहता है, लेकिन करमा की सजगता के कारण सफल नहीं बन पाते। नेताजी करमा को रॉक फाऊंडेशन जाने का झूठा निमंत्रण देकर युरोप सहित सारी दुनिया घूमाने का प्रलोभन देते हैं। लेकिन करमा के रंजनमामा प्रेस में होने के कारण करमा को सत्य स्थिति बताते हैं। 'वर्ल्ड कल्चर सेंटर' न्यूयॉर्क के डॉ. ई. थॉमसन को बिना ब्लाऊज पहने आदिवासी स्त्रियों के नृत्य को फिल्माने में सहयोग देने से करमा इन्कार करता है। तब करमा को लगता है कि क्या गरीब और आदिवासियों के पास ही संस्कृति है ?

बाकी लोगों के पास क्या संस्कृति नहीं है ? वे क्यों अपनी बहू-बेटियों को लेकर नहीं नाचते। गरीब और आदिवासियों ने ही नाचने का ठेका ले रखा है ? यह मानव विज्ञान उसे मानव-विरोधी लगता है। यह मानव विज्ञान शास्त्र केवल आदिवासी को माल समझता है। अंतः आदिवासियों का शोषण अनेक रूपों में किया जाता है। जिसे निश्चछ आदिवासी समझ नहीं सकते। लेकिन करमा जैसे शिक्षित लोगों द्वारा उनमें अब चेतना जाग्रत हो रही है।

आदिवासियों का शोषण केवल गैर-आदिवासियों द्वारा नहीं हुआ । आदिवासियों के नेता कहे जानेवाले विधायक जी द्वारा भी हुआ है। उन्होने आदिवासी कल्याण के नाम 'आदिवासी भूमि-मुक्ति मोर्चा' संगठन के आधार पर ऐसा नाटक शुरू कर देते हैं कि न तो आदिवासी का भला होता है और न ही उस व्यक्ति का जिसने कभी आदिवासी की जमीन खरीदी थी। विधायक जी के षड्यंत्र का शिकार बन जाते हैं। आदिवासी युवक एतवा और डॉ. जयप्रकाश जो रंगपुर में लोकप्रिय डॉक्टर हैं। वे दोनों उस नाटक में पीसते हैं। प्रायः विधायकजी गगनांचल के आदिवासियों के नेता माने जाते हैं। गगनांचल अलग राज्य बनाने के नाम पर प्रायः बंद, आर्थिक रैली, नाकेबंदी, जुलूस आदि का आयोजन करके आदिवासियों का जीवन तहस-नहस करते हैं। इसके पीछे विधायक जी के अलग नीति है। बंद के नाम पर जबरन दुकानदारों से चंदा वसूल करना और आर्थिक नाकेबंदी के नाम पर आने-जानेवाले ट्रकों पर के लोगों से मुँहमांगी रकम वसूल करने का धंधा बनाया है। इस रैली में नंग-धडंग बच्चों के साथ, चिलचिलाती धूप, तेज बारिश और हाड़ को भी कंपा देनेवाली सर्दी में भूख और प्यास से आदिवासी बच्चे बिलबिलाते दिखाई देते हैं। रैली खत्म होने के बाद भूखे लोगों द्वारा नादिरशाही लूट मचाते हैं।

महुआ आदिवासी छात्राओं के साथ 'जोगी जलप्रपात' पर पिकनिक मनाने जाती है। उस समय महुआ अपनी छात्रा की रक्षा गुंडों से करते समय मोटू, लंबू और उनके चार साथी मिलकर महुआ पर सामुहिक बलात्कार करते हैं। उन्हें बचाने के लिए विधायक जी महुआ को मुकदमा वापस लेने के लिए खरीदना चाहते हैं। लेकिन महुआ अपने को नहीं बेचती। तब विधायक जी नेताजी के द्वारा करमा को महुआ पर दबाव डालने की कोशिश करते हैं। परंतु करमा की सजगता के कारण विधायक जी वहाँ भी सफल नहीं बनते। तो कैला के द्वारा महुआ से संबंधित उसकी सहेली जैना मिज से 'अमर' जो कि महुआ का नाजायज बच्चा साबित करना

चाहते हैं। परंतु ऐन वक्त पर जैंना मिंज सच्चाई बताकर महुआ को चरित्रहीन होने से बचाती है। विधायकजी के सारे हथकंडे नाकामयाब होते दिखाई देते हैं। तब रंगपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. मदन त्रिवेदी से महुआ को विभाग से निकालने के लिए कुलपति महोदय को शिकायती पत्र पेश करने के लिए तथा उन्हें गगनांचल अलग राज्य होते ही मुख्यमंत्री का शिक्षा सलाहगार और कुलपति बनाने का प्रलोभन देते हैं। लेखक ने यहाँ राजनीति का शिक्षा व्यवस्था में किस तरह हस्तक्षेप होता है इसका पर्दाफाश इस प्रसंग के माध्यम से किया है।

आदिवासियों का सबसे बड़ा शत्रु है- शराब, हँड़ियाँ और होड़ोग। शराब उनकी तबाही का मूल कारण बताया है। इसकी वजह से उनकी मातृभूमि छीन जाती है, बेटी और माँ भी छीन जाती है। आदिवासियों का शोषण रोकना है तो उन्हें चेतित करना आवश्यक है। आदिवासियों को युग के अनुरूप अपने को ढालना जरूरी है। नहीं तो उनका शोषण कभी बंद नहीं होगा। यह मौलिक विचार लेखक ने यहाँ बताया है। महुआ के द्वारा आदिवासियों के प्रति सौहार्दपूर्ण संबंध को चित्रित किया है। विधायक जी के गुंड़ों द्वारा महुआ बलात्कार की शिकार बन जाती है। उस समय महुआ को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। राजनेता लोगों के घिनौने रूप, झूठी सहानुभूति दिखानेवाले लोगों की ऐसे मौकों पर तादाद होती है, वह चाहे मुख्यमंत्री हो, पत्रकार, संवाददाता एवं महिला संगठन का अध्यक्ष। यह सब लोग सिर्फ झूठी संवेदना दिखाने का प्रदर्शन करते हैं। इसी समय डॉ. सीमा जैसे लोग रुपए कमाने के लिए डरा-धमकाकर बलात्कारी युवतियों से गलत रिपोर्ट लिखने में माहिर हैं। परंतु महुआ अपने सिद्धांतों का त्याग नहीं करती बल्कि सही रिपोर्ट लिखने के लिए बाध्य करती है। उसी दौरान् मुख्यमंत्री महुआ को दस हजार रुपए देने की घोषणा करते हैं। तब महुआ असमंजस में पड़ जाती है और सोचने लगती है कि यह पुरस्कार है या क्षतिपूर्ति। एक नारी की इज्जत की कीमत दस हजार रुपए लगानेवाले मुख्यमंत्री को पत्र द्वारा लानत भेजती है और पैसे के बदले उन्हें न्याय की माँग करती है। 'खबरनामा' में छपे साक्षात्कार से भी मुहुआ क्रोधित होती है और उसका प्रखर विरोध करती है। मीडिया की घटिया मानसिकता के ऊपर तिलमिलाती है। आज नारी को सिर्फ उपभोग्य की वस्तु समझकर उसका विक्रय करने का प्रयास जारी है। वह सोचने लगती है- ''औरत का शरीर बेचने वाला यह समाज कभी चुप नहीं बैठ सकता ! कभी वह औरत को बेचता है चित्र के रूप में,

कभी बेचता है सौंदर्य प्रतियोगिता के नाम पर, कभी वह बेचता है सहानुभूति प्रदर्शित करने के बहाने और कभी वह बेचता है संस्कृतिकर्म के हीले से। इस दुनिया में औरत को हर युग में बिकाऊ ही माना जाता रहा है। आज शायद कीमत की दृष्टि से बाजार में सबसे सस्ती और महँगी वस्तु औरत ही है।''[1] इस प्रकार नारी समाज में युगों-युगों से पीड़ित है। अब वह शिक्षित बनकर सम्मान के साथ जीना चाहती है तो उसका जीना घटिया मानसिकता के समाज ने दुष्कर बनाया है। आज वह अपने हक के प्रति सचेत बन गई है।

महुआ के माध्यम से लेखक ने आदिवासी युवतियों की बलात्कार की शिकार बनने पर निर्भीड़ और साहस के साथ संघर्ष करने का संदेश दिया है। महुआ के माध्यम से लेखक ने बलात्कार से पीड़ित महिलाओं की समस्याओं पर गहराई के साथ अपने विचार प्रस्तुत किया है। बलात्कार शब्द दोधारी तलवार की तरह होता है उसके वार से पुरुष तो प्रभावित नहीं होता, मगर नारी दो टुकड़ों में ऐसी कटती है कि न तो उसे समाज स्वीकारना चाहता है और न ही उसके परिवारवाले। बलात्कार से पीड़ित महिला की स्थिति दुविधापूर्ण बन जाती है। ''इससे पीड़ित नारी का पहले तो शारीरिक शोषण होता है और फिर आर्थिक शोषण। पुलिस या डॉक्टर सीमा जैसे लोगों को बढ़िया बहाना मिल जाता है।''[2] इन सब सीढ़ियों से पार कर कोई नारी आगे निकलती है तो न्यायालय में एक ऐसे भेडिए से मुठभेड़ होती है कि वह अपनी भाषा के तीखे नाखूनों से और पैने दाँतों से उसके जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कर बलात्कार से पीड़ित नारी को निर्वस्त्र करना चाहता है। ''बलात्कारी तो केवल शरीर से खेलता है- केवल कुछ ही मिनटों के लिए। लेकिन यह दुःशासन बलात्कार की शिकार युवती या महिला के साथ लगातार घंटो खेलता है।''[3] इस बात से लेखक यह दर्शाना चाहते हैं कि आदिवासी युवतियाँ अक्सर इस तरह की घटना का शिकार बनती हैं। लेकिन वह न उसका प्रतिशोध लेती हैं, न उसकी तरफ कोई ध्यान भी नहीं देता। आदिवासियों में अन्याय के प्रति संघर्ष करने के लिए जाग्रत करने का कार्य महुआ के माध्यम से लेखक ने यहाँ किया है।

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 232
2. सतीश पांडेय - आदिवासी शोषण और व्यवस्था-विरोधी 'हस्तक्षेप', पृ. 67
3. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 261

अंत में महुआ कानून की अमानवीयता के विरूद्ध संघर्ष करने का दृढ़ संकल्प करती है। इसके लिए विश्वविद्यालय से त्यागपत्र देकर वकालत करके बलात्कार से पीड़ित महिलाओं को संरक्षण देने का संकल्प करती हैं। यहाँ लेखक ने कानून की अराजकता, अमानवीयता के ऊपर तीखा प्रहार किया दिखाई देता है। उपन्यास की कथावस्तु लगभग दो सौ बाहत्तर पृष्ठों में और पचपन भागों में विस्तार के साथ लेखक ने प्रस्तुत की है।

निष्कर्षतः यहाँ गोस्वामी जी यह बताते हैं कि आदिवासियों का जीवन अभावग्रस्त, निर्धन, ऋणग्रस्त, शोषित एंव दमित होने के कारण उनके जीवन में राजनेताओं ने हस्तक्षेप करके आर्थिक शोषण करने का भरसक प्रयास किया है। आदिवासियों के विकास, संस्कृति, कल्याण के नाम पर राजनेताओं ने अपनी तिजोरियाँ भरने का कार्य किया है। स्वतंत्र भारत में आदिवासी जीवन की बड़ी त्रासदी बन गई है। व्यावसायिक, बुद्धिजीवी लोगों ने तो आदिवासी को माल समझकर उसका विक्रय करके आर्थिक लाभ कमाने का व्यापार शुरू किया है। आदिवासी संस्कृति के नाम पर सरकार से लाखों रुपयों का अनुदान हड़पने में भी राजनेता लोग माहिर हैं। आदिवासी लोग स्वच्छंदी, निश्छल, प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करके प्रतिकूल परिस्थिति में अपना जीवनयापन कर रहे हैं लेकिन यह तथाकथित राजनेता लोगों ने उनका जीवन यातनामय बनाया है। कानून की अराजकता, मीडिया एवं पत्रकारों का पर्दाफाश, झूठी संवेदना दिखानेवालों पर भी लेखक ने करारा व्यंग्य किया है। अशोक प्रियदर्शी कहते हैं- " 'हस्तक्षेप' प्रेमचंद के आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की ज़मीन का उपन्यास है।"[1] उपन्यास की कथावस्तु मार्मिक एवं रोचक बन गई है।

3.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण -

'हस्तक्षेप' में पात्रों की नहीं है। इस उपन्यास में प्रमुख पात्र तीन हैं- 1) डॉ. महुआ चक्रवर्ती, 2) बिरसी भगत और 3) करमा भगत हैं।

सहायक पात्र के अंतर्गत - नेताजी, विधायकजी, रहमतअली, लंबू और मोटू जो विधायकजी के कार्यकर्ता हैं। बुधनी, लुसी और कार्नेलिया, जैना मिंज, हेलेना, डॉ. जयप्रकाश, एतवा, रंगिया, मनबोध, कैला, डॉ. सक्सेना, डॉ. नजमा, डॉ. मनोजसिंह, पांडेय राजकिशोर, डॉ. मदन त्रिवेदी, डॉ. ई. थॉमसन आदि।

---

1. अशोक प्रियदर्शी - राजनीति की बिसात पर आदिवासियों को मोहरा बनाए जाने की प्रवृत्ति में सार्थक हस्तक्षेप, पृ. 54

3.2.1 प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण -

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण निम्नलिखित प्रस्तुत है -

3.2.1.1 डॉ. महुआ चक्रवर्ती -

डॉ. महुआ चक्रवर्ती 'हस्तक्षेप' उपन्यास की नायिका है। वह संघर्षों का दृढ़तापूर्वक सामना करनेवाली जुझारू, दूरदृष्टि संपन्न एवं सजग प्राध्यापिका भी हैं। उसका बचपन संघर्षों में ही बीता है। अतः उसमें दृढ़ता एवं संकल्पशक्ति है। वह उपन्यास का सशक्त पात्र बनने में सफल हुई है। महुआ सौंदर्यवती, संघर्षशील, साहसी एवं निर्भीड, आत्मीयतापूर्ण, स्वाभिमानी, मानवतावादी दृष्टिकोण, संवेदनशील, अंतर्द्वंद्व से पीड़ित नारी आदि चारित्रिक विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

3.2.1.1.1 सौंदर्यवती -

महुआ चक्रवर्ती सौंदर्यवती युवती है। उसकी शरीर की गठन से ही देखते ही बन जाती है। महुआ का चेहरा गोल है। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी और काले केश होने के कारण काफी सुंदर और प्रभावशाली लगती हैं। हलकी-सी दबी हुई नाक में काफी सुंदर लगती है। ''जो महुआ ऐसी कुशाग्र है, वह कुछ पाने के लिए किसी की अंकशायिनी नहीं हो सकती। महुआ के विचार, उसकी भाषा, उसका आत्मविश्वास सभी तो यह प्रमाणित कर रहे हैं कि डॉ. महुआ चक्रवर्ती सामान्य नहीं विशिष्ट हैं।''[1] उसका व्यक्तित्व सशक्त एवं सौंदर्यपूर्ण बन पड़ा है। अतः महुआ चक्रवर्ती सौंदर्यशाली व्यक्तित्व की प्राध्यापिका हैं।

3.2.1.1.2 संघर्षशील -

महुआ चक्रवर्ती के चारित्रिक में संघर्षशीलता यह एक गुण दिखाई देता है। बचपन से ही उसका संघर्ष शुरू है। बचपन में पिताजी और भाई की दुर्घटना में मृत्यु होने के कारण मामा के घर में पली। जब तक रुपए थे तब तक उसकी और उसके मां की तरफ ध्यान दिया जाता था। परंतु रुपए खत्म होते ही उनकी तरफ किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। उसी समय उसकी माँ की भी साँप काटने के कारण मृत्यु हो जाती है और महुआ को अमित नाम के लड़के से पैसे लेकर उसके

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 75

मामाजी ने उसके हाथ बेचते हैं। अमित ने परेश से पाँच हजार रुपए लेकर महुआ को उसके हाथ में बेच डाला। इसी दरम्यान महुआ पर क्या गुजरी होगी, यह उपन्यास पढ़ते ही समझ में आता है। परेश के चँगुल से भागकर यहाँ गोविंदपुर में एक शिक्षिका के घर में नौकरी करके रहने और आगे की शिक्षा शुरू करती है और रंगपुर विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका और आदिवासी महिला छात्रावास में अधीक्षिका बनकर नियुक्ती होती है। यहाँ भी उसका संघर्ष विभाग के सहकर्मियों से, विधायक जी से, बलात्कार किए हुए आरोपियों से चलता रहता है। वह संघर्षशील युवती होने के साथ-साथ दृढ़निश्चयी भी है।

3.2.1.1.3 साहसी एवं निर्भीड -

महुआ चक्रवर्ती साहसी एवं निर्भीड युवती है। जब वह आदिवासी महिला छात्रावास में अधीक्षिका बनकर आती है तब वह सांस्कृतिक कार्यक्रम में लड़कियों को भेजने से मना करती है और विधायक जी का रोष भी सहन करती है। जो छात्राएँ गलत मार्ग पर चल रही थी उनको सही मार्ग देखाती है। जिस समय पत्रकार उसे प्रश्न पूछता है तो महुआ उसके प्रश्नों का उत्तर बिना हिचकिचाते देती हैं। वह किसी से दबना या तणाव में रहना बिल्कुल पसंद नहीं करती। महुआ चक्रवर्ती अपनी छात्राओं के साथ जोगी जलप्रपात पर पिकनिक मनाने जाती है। वहाँ महुआ के साथ दुर्घटना घटित होती है। वहाँ लंबू, मोटू और उनके चार साथी पहुँचते हैं और बंदुक की गोलियों से उन्हें आतंकित करके हेलेना को जबरदस्ती उठाकर लेने के साथ-साथ ही आधा दर्जन लड़कियों की माँग करते हैं, उनमें हेलेना जरूर हो ऐसे भी बताते हैं। उस समय महुआ चट्टान की तरह अड़ जाती है और इसके परिणामस्वरूप छात्राओं के सम्मिलित उनके विरोध में खड़ी हो जाती है। छात्राओं को गोलियों से आतंकित करके महुआ को उठा विश्रामगार में ले जाकर बारी-बारी से उसके साथ सामूहिक बलात्कार करते हैं। महुआ अपने दायित्व और कर्तव्य का संवहन करके नई समस्याओं एवं संकटों का भी सामना करती है। छात्राओं की इज्जत बचाने में गुंडों द्वारा सामूहिक बलात्कार की शिकार बन जाती है। फिर भी वह अपराधियों को सजा दिलाने में सफल होती है। यहाँ महुआ के साहसी और निर्भीड व्यक्तित्व का परिचय यहाँ हमें मिलता है।

3.2.1.1.4 आत्मीयतापूर्ण -

महुआ आदिवासियों के साथ आत्मीयतापूर्ण संबंध रखनेवाली युवती है। महुआ जब आदिवासी महिला छात्रावास में अधीक्षिका बनकर आती है तो वहाँ का माहौल देखकर बहुत चिंतीत हो जाती है। सबसे पहले वह छात्राओं के साथ आत्मीयतापूर्ण संबंध स्थापित करके उन्हें सही दिशा दिखाने का प्रयास करती है। उसमें वह सफल भी हो जाती है। करमा भगत और बिरसी भगत से भी स्नेहपूर्ण संबंध स्थापित करके करमा को 'आदिवासी सांस्कृतिक विकास परिषद' को नेताजी रहमतअली किस तरह अनुदान हड़पने के लिए उसका प्रयोग कर रहे हैं यह बताकर उसे सजग करती है। आदिवासियों को राजनेता लोगों ने माल समझकर उसका किस तरह इस्तेमाल कर रहे हैं यह बताकर भी महुआ करमा को सचेत करती है। व्यावसायिक और बुद्धिजीवी लोग आदिवासियों को जहाँ-तहाँ नाचने-गाने का रिवाज बना के रुपए कमाने का धंधा या व्यापार किस तरह बनाया है और मानव विज्ञान शास्त्र ही मानवविज्ञान-विरोधी बनता किस तरह जा रहा है इस दृष्टि की तरफ करमा का ध्यान आकर्षित करके उसे सजग बनाने की चेतना देती है। इस तरह महुआ का आदिवासियों के प्रति आत्मीयता भाव दिखाई देता है।

3.2.1.1.5 स्वाभिमानी -

महुआ चक्रवर्ती के चरित्र का स्वाभिमान यह एक गुण दिखाई देता है। महुआ बचपन से संघर्षशील होने के कारण उसमें स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा दिखाई देता है। वह सत्य को स्वीकारने का साहस रखती है और झूठ का विरोध करने से भी पीछे नहीं हटती। महुआ सामूहिक बलात्कार से पीड़ित होती है तब विधायक जी उसे मुकदमा वापस लेने के लिए उस पर दबाव डालते हैं और महुआ को मुकदमा वापस लेने के लिए उसे खरीदना चाहते हैं। पाँच सौ रुपयों के नोटों की एक गड्डी लिफाफे में रखकर चले जाने लगते हैं। परंतु महुआ गड्डी देखते ही एक बार ऊपर से नीचे तक काँप उठती है। वह विधायक जी को चालाक समझती है और उन्हें तिलमिलाते हुए कहती है कि "आपने अपनी इस बेटी की कीमत बहुत कम आँकी है ! यह बोलकर महुआ ने वह लिफाफा विधायक जी के मुँह पर जान-बूझकर दे मारा।"[1] यहाँ महुआ का स्वाभिमानी गुण दिखाई देता है। जब मुख्यमंत्री भी दस हजार रुपए देने की घोषणा करते हैं तब भी

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 196

वह उन्हें पत्र द्वारा लानत भेजती है और न्याय की माँग करती है। इस बात से पता चलता है कि डॉ. महुआ चक्रवर्ती स्वाभिमानी नारी है।

3.2.1.1.6 मानवतावादी -

मानवतावादी दृष्टिकोण डॉ. महुआ चक्रवर्ती के स्वभाव वृत्ति का गुण दिखाई देता है। वह स्वयं गैर-आदिवासी होकर भी आदिवासियों के साथ स्नेहपूर्ण संबंध रखती है। जहाँ भी आदिवासियों के साथ अन्याय, अत्याचार हो रहा हो वहाँ पहुँचकर उनमें चेतना लाने का प्रयास किया है। आदिवासी भोले-भाले निश्चछ होने के कारण उनमें चेतना लाने का प्रयास भी किया है। करमा भगत और छात्राओं की मद्द से आदिवासियों को अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए चेतित किया है। उनमें आत्मसम्मान जाग्रत करके विधायक जी, गैर-आदिवासी नेताजी रहमत अली जैसे लोगों की पोल खोल दी है। साथ-ही-साथ उन पर तीखा व्यंग्य प्रहार किया है।

3.2.1.1.7 संवेदनशील एवं स्वावलंबी नारी -

महुआ चक्रवर्ती स्वावलंबी एवं संवेदनशील नारी भी है। जब उसके पिताजी और भाई के दुर्घटना के बाद भी अपनी शिक्षा जारी रखती है। उसी बीच उसकी माँ की भी मृत्यु हो जाती है। उस समय वह डटकर संघर्ष का सामना करके अपने पिताजी का सपना पूरा करने का फैसला करके गोविंदपुर आकर एक शिक्षक के घर पर ट्यूशन लेकर एम्. ए., पीएच्. डी. की पढ़ाई पूरी कर लेती है। यहाँ उसका स्वावलंबी गुण दिखाई देता है। जब हेलेना को छात्रावास की लड़कियाँ 'चरकी' कहकर पुकारती हैं तो उसके संबंध में पूरी जानकारी लेने के बाद 'हेलेना' को सर्वसामान्य छात्राएँ की तरह वह खुश रहे, इसकी तरफ वह ध्यान देती है। यहाँ महुआ की संवेदनशील वृत्ति दिखाई देती है।

3.2.1.1.8 अंतर्द्वंद्व से पीड़ित नारी -

अंतर्द्वंद्व से पीडित नारी यह एक महुआ चक्रवर्ती के चरित्र की विशेषता दिखाई देती है। बिरसी भगत जब महुआ को करमा के लिए माँगना चाहती है तब महुआ अंतर्द्वंद्व से पीड़ित हो जाती है। उसके जीवन में पूर्व घटित प्रसंगों की स्मृतियाँ बार-बार उसे कुरेदती हैं। लेकिन वह दृढ़ निश्चयी होने के कारण महुआ बिरसी को पत्र द्वारा सब कुछ सत्य बताने का साहस

भी रखती है। तब उसकी आंतरिक एवं बाह्य मन की दुविधा मनस्थिति का वर्णन किया है। करमा भी महुआ को चाहने लगता है, उसकी कहानी सुनकर वह भावविभोर हो जाता है। बिरसी इस स्थिति में भी महुआ को स्वीकारना चाहती है तब महुआ कहती है कि "मैं इतना बड़ा पाप और विश्वासघात नहीं कर सकती। मैं अपने आराध्य की उपासना में यह जूठन कभी नहीं चढ़ा सकती।"[1] इस घटना से पता चलता है कि महुआ अंतर्द्वंद्व से पीड़ित होने के बावजूद भी उसे साहसपूर्वक स्वीकारना अपना परमकर्तव्य मानती है। वह किसी को भी अंधकार में रखना पसंद नहीं करती, यहाँ वह स्पष्टवादी भी दिखाई देती है।

महुआ चक्रवर्ती में सत्यवादी, आत्मनिष्ठ, संघर्षशील, निर्भीड एवं साहसी, मानवतावादी एवं संवेदनशील, चुनौती का सामना करनेवाली, विदुषी, सजग प्राध्यापिका, सौंदर्यवती आदि अनेक चारित्रिक विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

3.2.1.2 करमा भगत -

उपन्यास के प्रमुख पात्रों में से करमा भगत एक पात्र है। डॉ. करमा भगत मानवविज्ञान का व्याख्याता रंगपुर विश्वविद्यालय में है। करमा भगत सुप्रसिद्ध बाँसुरीवादक हैं। यह श्रीमती बिरसी भगत का सुपुत्र है। करमा भगत साधा, निश्छल, सिद्धांतवादी है। अपने जाति की उन्नति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है। करमा भगत की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

3.2.1.2.1 सीधा-साधा एवं निश्छल प्रवृत्तिवाला -

करमा भगत अत्यंत सीधा-साधा निश्छल आदिवासियों की तरह जीवनयापन करनेवाला आदिवासी युवक है। उसकी आदतें बहुत भोली-सी हैं। करमा भगत रंगपुर विश्वविद्यालय, रंगपुर में मानवविज्ञान का व्याख्याता है। वह सीधा अपना काम भला और आप भला मानता है। वह बुद्धिवान और कर्तव्यनिष्ठ युवक है। करमा भगत की व्यक्तित्व की विशेषताओं के बारे में लेखक बताते हैं- "करमा भगत अन्य आदिवासियों की तरह ही सरल एवं निश्छल हैं। वह दाँव-पेच जानते ही नहीं। छल-प्रपंच की यदि उन्हें ट्रेनिंग भी देना चाहे तो शायद

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 138

उसके हाथ असफलता ही लगेगी।"[1] वह सरल और निश्छल होने के कारण किसी के जाल में सहज ही फँस जाता है। उसे सही क्या ? गलत क्या ? इस बात का ज्यादातर अनुभव न होने के कारण आदिवासियों की तरह सहज ही किसी के भी जाल में फँस जाता है।

3.2.1.2.2 प्रतिभासंपन्न एवं बुद्धिमानी -

करमा भगत प्रतिभासंपन्न एवं बुद्धिमानी व्यक्तित्व का सुप्रसिद्ध बाँसुरी वादक है। करमा मानवविज्ञान का व्याख्याता है। वह बाँसुरी वादन की कला से आदिवासियों में लोकप्रिय है। वह आदिवासियों का बहुत बड़ा कलाकार है। करमा भगत आदिवासियों के जगत् में आदिवासी लोगों का माथा ऊँचा करने में सदैव प्रयत्नशील रहा है। करमा भगत का रंगपुर आकाशवाणी पर बाँसुरीवादन का कार्यक्रम होते हैं। वह बाँसुरीवादन में इतना मंत्रमुग्ध होता है कि सारे श्रोताओं को कृष्ण कन्हैया की याद आए बिगर नहीं रहती। श्रोता लोग भी उसके बाँसुरीवादन सुनकर मंत्रमुग्ध होकर हिलने-डुलने के लिए बाध्य हो जाते हैं। करमा भगत मानवविज्ञान का छात्र होने के कारण उन्होने आदिवासियों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया है। करमा भगत सुप्रसिद्ध बाँसुरीवादक एवं सर्वगुणसंपन्न, कर्तव्यनिष्ठ, प्रतिभासंपन्न एवं बुद्धिमानी युवक है। वह आदिवासियों के कल्याण के लिए अपना सारा समय व्यतीत करना अपना आद्य कर्तव्य मानता है।

3.2.1.2.3 सेवाभावी वृत्तिवाला -

करमा भगत सेवा-परायण वृत्ति का युवक है। वह सदैव आदिवासियों के हित के लिए प्रयत्नशील रहता है। आदिवासी कल्याण एवं विकास के लिए दुर्गम भाग रामडेरा गाँव जाकर दो सौ वर्ष पुरानी सुखदेव लिखित महाकाव्य की पांडुलिपि लेकर आता है। 'आदिवासी सांस्कृतिक विकास परिषद' के मंत्री के पद पर करमा भगत काम करता है। करमा भगत परिषद में तन-मन से कार्य करता है। करमा अपने जीवन में यदि किसी को गुरु मान सकता है तो वह है उसकी माँ बिरसी भगत को जब महुआ पर सामूहिक बलात्कार होता है और वह अस्पताल में भर्ती हो जाती है तब वह अस्पताल में पूरी कर्तव्यनिष्ठा से उसकी देखभाल करता है। आदिवासियों के शोषण के विरूद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा उसे महुआ से ही मिलती है। अतः करमा सेवाभाव में होने के कारण अपने आदिवासियों की सेवा कर्तव्यनिष्ठा से करता है।

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी, हस्तक्षेप, पृ. 73

3.2.1.2.4 संवेदनशील व्यक्तित्ववाला -

करमा भगत अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति है। करमा दूसरों के दुःख देखकर दुःखी हो जाता है। करमा भगत आदिवासियों का दुःख, शोषण, गरीबी, अभावग्रस्तता, निर्धन, यातायात की असुविधा जैसे समस्याओं को देखकर संवेदनशील हो उठता है। आदिवासियों का शोषण तरह-तरह से उसे अपने जाल में फँसाकर उनका किस तरह इस्तेमाल यह राजनीतिज्ञ लोग कर रहे हैं, इस बात से बहुत चिंतित है। करमा भगत आदिवासी युवक-युवतियां का एक दल लेकर गणतंत्र दिवस पर आदिवासी नृत्य करने के लिए जाता है। दिल्ली जैसे महानगर का माहौल उसे सिर्फ संस्कृति के नाम दिखावा लगता है। जब महुआ को बिरसी करमा से शादी करने के लिए हाथ माँगती है तब महुआ बिरसी को अपनी पूर्वघटित प्रसंगों को कहकर शादी करने से इन्कार कर देती है। तब करमा बहुत संवेदनशील हो जाता है और महुआ के प्रति संवेदनशील होकर उसकी साहस और निर्भीड वृत्ति की मुक्त कंठ से प्रशंसा भी करता है। करमा भगत योग्य, कर्मठ एवं ईमानदार व्यक्ति है। करमा भगत अपने कर्तव्य को पूरी निष्ठा के साथ निभाता है। साथ-ही-साथ वह संवेदनशील व्यक्ति भी है।

3.2.1.2.5 आदिवासियों के प्रति समर्पित -

करमा भगत को आदिवासियों के प्रति बेहद लगाव है। करमा भगत आदिवासियों के शोषण के विरूद्ध संघर्ष करता है। आदिवासियों का विधायकजी, नेताजी, राजनेता लोगों द्वारा सदियों से शोषण करते आ रहे हैं। उन्हें रोकने के लिए करमा आदिवासियों में चेतना लाने का प्रयास करता है। आदिवासी सीधे-साधे होने के कारण उनका नाजायज फायदा यह समाज के राजनीतिज्ञ उठा रहे हैं। आदिवासी संस्कृति के नाम पर झूठा प्रदर्शन करनेवाले नेताजी का पर्दाफाश करते हुए कहते हैं कि - "हम आदिवासी गरीब जरूर हैं, लेकिन हमारी नग्नता बिकाऊ नहीं है... वह प्रदर्शन की भी चीज नहीं है... अब वह और नहीं बेची जा सकती... आप जैसे घटिया लोग अब उसकी और तिजारत कभी नहीं कर सकेंगे....।"[1] यहाँ करमा भगत आदिवासियों के शोषण से पीड़ित दिखाई देता है। करमा आदिवासियों में चेतना लाने के लिए तन-मन से अर्पित है। इससे स्पष्ट होता है कि करमा भगतजी का आदिवासियों के प्रति समर्पित है।

---

1. डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 239

3.2.1.2.6 संघर्षशील व्यक्तित्व -

करमा भगत की चारित्रिक विशेषताओं में संघर्षशीलता दिखाई देती है। करमा भगत में संघर्षशीलता बचपन से ही दिखाई देती है। करमा भगत संस्कारशील युवक होने के कारण अन्याय के विरूद्ध उसका प्रतिशोध लेना अनिवार्य मानता है। बिरसी भगत ने करमा के बचपन में ही संघर्ष के बीज बोये हैं, यह उसकी व्यक्तित्व की झलक से दिखाई देता है। करमा कहता है कि "क्या संस्कृति केवल आदिवासियों और गरीबों के पास ही होती है ? क्या बाकी लोगों की कोई संस्कृति नहीं होती ? बाकी लोग क्यों नहीं नाचते अपनी बहू-बेटियों को लेकर ऐसे अवसरों पर ! क्या आदिवासियों ने ही नाचने का ठेका ले रखा है ?"[1] इस बात से स्पष्ट होता है कि करमा को लगता है कि संस्कृति के नाम पर सिर्फ दिखावा करता है। ऐसे प्रदर्शनों से आदिवासी संस्कृति को कोई लाभ नहीं होनेवाला है। यहाँ करमा का संघर्षशील व्यक्तित्व दिखाई देता है। जब करमा को दिखाई देता है कि सोना को नेताजा इंटरव्यू के बहाने ले जाकर किसी अफसर के साथ एक रात भेजना चाहते हैं तब करमा सजग हो जाता है और इसका कड़ा विरोध भी करता है। नेताजी करमा को जाली पत्र देकर रॉक फाऊंडेशन अमेरिका जाने का झूठा निमंत्रण देते हैं। तब रंजन मामा के द्वारा सही बात का पता चलने पर करमा नेताजी और रहमतअली की धज्जियाँ उड़ा देता है। जब डॉ. ई. थॉमसन आदिवासी युवतियों के फोटो फिल्माने चाहते हैं तब भी करमा उसका विरोध करता है। करमा कहता है कि "नेताजी, आज आपका असली चेहरा भी सामने आ ही गया। आज यह मालूम हो ही गया कि आप वास्तव में क्या है ! आज तक आप दोनों आदिवासियों की संस्कृति बेच रहे थे और अपनी तिजोरियाँ भर रहे थे। मालूम नहीं कितना बड़ा पेट है आप दोनों का जो कभी भरता ही नहीं। अब आप दोनों दुनिया की खुली मंडी में हम आदिवासियों की नग्नता भी बेचना चाह रहे हैं ! मैं नहीं जानता था कि आप दोनों इतने गिरे हुए आदमी हैं।"[2] इससे पता चलता है कि करमा का व्यक्तित्व संघर्षशील ही नहीं, उसका सामना करने की शक्ति भी उसमें है।

3.2.1.2.7 मानवतावादी दृष्टिकोण -

करमा भगत संस्कारशील युवक होने के साथ-साथ मानवतावादी भी है। करमा भगत की आदिवासियों से आत्मीयता होने के कारण उनके शोषण के विरूद्ध संघर्ष करके

---

1. डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 121
2. वही, पृ. 239

आदिवासियों में चेतना जाग्रत करने का अथक प्रयास करता है। आदिवासियों के विकास के लिए करमा भगत सदैव तैयार रहता है। तन, मन, धन से आदिवासियों की सहायता करना चाहता है। करमा भगत महुआ चक्रवर्ती के द्वारा यह पहचान लेता है कि विधायक जी, रहमतअली एवं मुख्यमंत्री जैसे लोग आदिवासियों के विकास के नाम पर सिर्फ झूठा प्रदर्शन करते हैं। संस्कृति के नाम पर सरकार का अनुदान हड़पने का षड्यंत्र रचते हैं आदि बातों के प्रति सजग हो जाता है। करमा भगत मानवविज्ञान का छात्र है लेकिन यह मानव विज्ञान ही मानव-विरोधी शास्त्र है इसका पता भी उसे लगता है। डॉ. सक्सेना छात्र-छात्राओं के समवेत 'ओंगी जनजाति' का अध्ययन करने के लिए जाते हैं तब छात्राओं को प्रश्नावली थमाकर उन्हें सर्वेक्षण कार्य में लगा देते हैं और स्वयं ओंगी जनजाति की किशोरियाँ, युवतियाँ तथा महिलाओं की तस्वीरें उतरने में लग जाते हैं। तस्वीरें उतारते समय उनका ध्यान देह-सौष्ठव और पृष्ट वृक्षस्थल पर विशेष रूप से भर देते थे। डॉ. सक्सेना के पास ऐसे चित्रों का अपूर्व संग्रह है। आदिवासियों की संस्कृति के नाम पर डॉ. सक्सेना ने नया व्यापार शुरू किया है। करमा कहता है कि "आदिवासी महिलाओं के चित्र वे किसी विदेशी प्रकाशक के हाथ कुछ टिप्पणियों के साथ बहुत ऊँची कीमत पर बेच दिया करते थे।"[1] यहाँ करमा के सामने सवाल पैदा होता है कि डॉ. सक्सेना तो आदिवासियों के एक प्रमुख विशेषज्ञ माने जाते हैं। साथ-ही-साथ वे करोडपति भी बन गए हैं। लेकिन डॉ. सक्सेना ने आदिवासियों के नाम पर यश और धन का उपार्जन किया है बल्कि उसके बदले में आदिवासियों को उसने क्या दिया है ? ऐसे लोग आदिवासियों का क्या खाक विकास करेंगे, सिर्फ आर्थिक लूट उन्होने क्या दिया है ? ऐसे लोग आदिवासियों का क्या खाक विकास करेंगे सिर्फ आर्थिक लूट मचाने का कार्य इन लोगों ने किया है। इस बात से करमा बहुत चिंतित हो जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि करमा के व्यक्तित्व में मानवतावादी दृष्टिकोण दिखाई देता है।

करमा को कृषि के प्रति बेहद लगाव है। करमा कर्तव्यपरायण एवं काम के प्रति प्रामाणिक और ईमानदार है। करमा का सौंदर्य देखते ही बन जाता है। करमा के विचार मौलिक एवं क्रांतिकारक भी हैं। करमा भगत सिद्धांतवादी एवं आदर्शवादी व्यक्ति भी है। वह अपने काम के प्रति निष्ठावान है।

---

1. डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 168

3.2.1.3 बिरसी भगत -

'हस्तक्षेप' उपन्यास का तीसरा प्रमुख पात्र है श्रीमती बिरसी भगत। बिरसी भगत उच्च विद्यालय की सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य है। वह साधी, सरल, उच्चविभूषित होकर भी सामान्य किसानिन की तरह अपना जीवन निर्वाह कर रही है। आदर्शों के लिए समर्पित है। शहर में रहते हुए भी भीड़-भाड़ से अलग शांत, सुस्थिर रहना पसंद करती है। बिरसी भगत की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित प्रस्तुत हैं -

3.2.1.3.1 सेवाभावी व्यक्तित्व -

श्रीमती बिरसी भगतजी अत्यंत सरल प्रेममयी और हृदयशील महिला है। आदिवासियों के प्रति उसके मन में सेवा-भाव जाग्रत होता दिखाई देता है। सरकार ने बाँध बनाने की परियोजना के नाम पर आदिवासियों का विस्थापन शुरू किया था तब बिरसी आदिवासियों के प्रति पीड़ित दिखाई देती है। वह महुआ को आदिवासियों के बारे में कहती है- ''करोड़पतियों के इस मुहल्ले में बस हमारा ही एक घर ऐसा है जहाँ हमारे जैसे गरीब रहते हैं।''[1] श्रीमती बिरसी भगत न चाहते हुए भी आदिवासियों के विस्थापन के बारे में बताती है। यहाँ बिरसी के सेवाभावी वृत्ति की झलक हमें दिखाई देती है।

3.2.1.3.2 प्रेरणामयी स्रोत -

बिरसी के व्यक्तित्व की प्रेरणामयी स्रोत यह गुण उसके व्यक्तित्व में हमे दिखाई देता है। बिरसी सदैव दूसरों को प्रोत्साहित करने का प्रयास करती है। वह शिक्षिका होने के कारण उसकी हृदय में प्रेरणा रची-बसी है। महुआ चक्रवर्ती का साक्षात्कार पढ़कर उसे वह प्रशंसा एवं प्रेरणामयी पत्र लिखती हैं। बिरसी एक संघर्षशील महिला होने के साथ-साथ ही महुआ और करमा भगत के पीछे सदैव शक्ति और प्रेरणा के रूप में खड़ी हैं। बिरसी महुआ के कार्य की प्रशंसा करके उसे उद्युक्त करती है। बिरसी करमा भगत को भी अच्छाई बुराई के बारे में सदैव सचेत करने का प्रयास करती है। महुआ अधीक्षिका का पद छोड़ने का मन में विचार करती है उसी समय बिरसी भगत जी का प्रशंसापरक पत्र पढ़कर उसे पुनः कार्य करने की प्रेरणा मिलती है और वह संघर्ष का

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 65

डटकर मुकाबला करने का दृढ़निश्चय करती है। इस बात से पता चलता है कि बिरसी भगत जी का व्यक्तित्व प्रेरणा स्रोत बन गया है।

3.2.1.3.3 सीधा-साधा जीवन निर्वा करनेवाली -

श्रीमती बिरसी भगत साधा और सरल किसानिन-सा जीवन निर्वाह करती है। वह उच्चविभूषित होने पर भी उसे कृषि के प्रति अत्यंत प्रेम है। बिरसी अपने नौकरों से भी अच्छा व्यवहार करती है। वह शहर में रहकर भी ग्रामीण महिला-सा जीवनयापन करती है। वह सदैव दूसरों को मदद करने के लिए तैयार रहती है। वह नेताजी, विधायक जी जैसे लोगों के काले कारनामें से अपने बेटे को सदैव सचेत करती है। उसे आदिवासियों के बारे में सहानुभूति और प्रेमभाव है। इसी तरह बिरसी भगत अपना जीवनयापन करती है।

3.2.1.3.4 संवेदनशील -

श्रीमती बिरसी भगत अत्यंत संवेदनशील महिला है। वह महुआ के कार्यों की प्रशंसा करके उसे सदैव प्रेरणा देने का कार्य करती है। वह अपने बेटे करमा को भी आदिवासियों के प्रति स्नेहभाव रखती है। आदिवासियों के शोषण की समस्या से चिंतित है। वह करमा को आदिवासियों को राजनेता लोगों के चंगुल से निकालने के लिए सतत प्रयत्नशील बनती है। वह नेताजी जैसे राजनीतिज्ञ से परिचित है। उसकी सब काली करतूतें उसे मालूम हैं। जब महुआ के पत्र द्वारा उसके जीवन की दर्दभरी कहानी पढ़ती है तो बिरसी संवेदनशील होती है। साथ-ही-साथ महुआ जब बलात्कार की शिकार बन जाती है तब उसके साथ अस्पताल में वह ठीक होने तक रहती है और उसे सदैव प्रसन्न रखने का प्रयास भी करती है। महुआ को साहस और धैर्य देने का प्रयास करती है। वह ममतामयी प्रेम की मूर्ति है। इस बात से स्पष्ट होता है कि बिरसी भगत संवेदनशील महिला है। बिरसी महुआ को कहती है कि "महुआ, तुम अपने गीले नयनों से मुझे बहलाने या धोखा देने की कोशिश मत करो। बोलो, तुमने क्यों लिख डाला वह सब ? क्या मैंने कभी तुमसे कुछ पूछा भी था ? अरी बेटी ! क्या मैं नहीं जानती कि औरत की योनि में जन्म लेनेवाली हर कन्या के साथ एक दुःख भरी कहानी भी जुड़ी रहती है ! बेटी, औरत का दूसरा नाम ही दुःख है।"[1] इस बात से महुआ के प्रति बिरसी भगत का हृदय संवेदनशील दिखाई देती है।

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 159

3.2.1.3.5 संघर्षशील

श्रीमती बिरसी भगत संघर्षशील महिला के रूप में भी लेखक ने यहाँ चित्रित किया है। बिरसी भगत संस्कारित सुशील महिला है। वह अपने पति के मृत्यु के बाद करमा का पालन-पोषण अत्यंत व्यवस्थित रूप में करके उसे एक संस्कारशील युवक बनाने में सफल होती है। करमा को एम्. ए., पीएच्. डी. तक शिक्षा भी देती है। खुद कष्ट उठाकर उसे बड़ा करती है। बिरसी करमा को नेताजी जैसे लोग सचेत रहने के लिए प्रायः कहती है। वह अपने मौलिक विचार करमा के सामने प्रस्तुत करती हैं- ''बेटा, तूने खुद देखा है कि जिस खस्सी की बलि दी जाती है, उसे पहले गुड़-चना आदि खिलाया जाता है। उसके गले में फूलों की माला पहनाई जाती है और माथे पर सिंदूर का टीका लगाया जाता है। खस्सी समझता है कि उसे जीवन में पहली बार गुड़-चना खाने को मिल रहा है और उसका इतना सम्मान किया जा रहा है। परंतु वह बेचारा यह नहीं जानता कि अब उसकी गर्दन ही छाँट दी जाएगी।''[1] बिरसी इस बात से यह दर्शाना चाहती है कि आदिवासियों को किस तरह फँसाया जाता है और उनका इस्तेमाल राजनेता लोग किस प्रकार करते हैं। इस बात से बिरसी का संघर्षशील व्यक्तित्व स्पष्ट होता है। बिरसी महुआ को पत्र में अपने विचार प्रस्तुत करती है कि ''विचारों की दृढ़ता उसी के पास होती है, जिसने कदम-कदम पर जीवन में कठिन चुनौतियों का मुकाबला किया हो।''[2] यहाँ बिरसी महुआ को संघर्ष करने के लिए प्रेरणा भी देती है और अपने विचारों के माध्यम से जुझारू एवं संघर्षशील दिखाई देती है।

3.2.1.3.6 आदर्शों के प्रति समर्पित -

बिरसी भगत अपने सिद्धांतों के प्रति सदैव समर्पित होती है। बिरसी भगत कभी भी झुकना या किसी के पास अपने सिद्धांतों की बलि देना कतई पसंद नहीं करती। उसे आदिवासियों के प्रति बेहद लगाव है। उनके शोषण को देखते झुँझला उठती है। वह किसी को बिना वजह नुकसान करना कतई पसंद नहीं करती। वह अपने सिद्धांतों के प्रति कठोर एवं आदर्शवादी है। वह महुआ को कहती है- ''मुझमें एक बुराई तो यह है कि मैं जिस आदमी या

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 53
2. वही, पृ. 59

चीज को एक बार बुरा मान लेती हूँ, उसे अच्छा मानना मेरे लिए बहुत कठिन हो जाता है।''[1] यहाँ स्पष्ट होता है कि बिरसी अपने सिद्धांतों के बारे में कभी भी समझौता नहीं करती। वह स्वाभिमानी महिला के साथ आदर्शवादी भी है। बिरसी के विचार क्रांतिकारी एवं मौलिक हैं। बिरसी स्पष्टवादी है और झूठी प्रशंसा से सख्त नफरत करती है। बिरसी आदर्श शिक्षिका, आदर्श माता और आदर्श समाज सेविका के रूप में भूमिका अदा करती है। बिरसी बेसहारों को सहारा देने में सदैव तत्पर होती है। इस बात से स्पष्ट है कि बिरसी अपने आदर्शों के प्रति सदैव समर्पित एवं कर्मशील है। वह काम को ही पूजा मानती है। यही उसका आदर्श लेखक ने प्रस्तुत किया है।

3.2.2. गौण पात्र -

गौण पात्रों के अंतर्गत निम्नलिखित पात्र कथावस्तु को गतिशील बनाने में सहायक होते हैं।

3.2.2.1 नेताजी -

नेताजी गौण पात्र के अंतर्गत आते हैं। नेताजी रहमतअली के मदद से 'आदिवासी सांस्कृतिक विकास परिषद' की स्थापना करके आदिवासी संस्कृति के उत्थान का प्रयास करते हैं। लेकिन वास्तव में घाघ राजनीतिज्ञ नेताजी आदिवासी संस्कृति के विकास के नाम पर लाखों रुपए सालाना का सरकारी अनुदान हड़पने का षडयंत्र रचते हैं। नेताजी 'आदिवासी सांस्कृतिक विकास परिषद' के अध्यक्ष हैं। नेताजी गैर-आदिवासी हैं लेकिन आदिवासियों का शोषण विकास, कल्याण एवं संस्कृति के नाम पर करते हैं।

3.2.2.2 विधायकजी -

विधायक जी संसद में आदिवासियों के सच्चे प्रतिनिधि माने जाते हैं। विधायक जी आदिवासियों के कल्याण के लिए 'आदिवासी भूमि मुक्ति मोर्चा' के नाम पर आदिवासियों का शोषण कर रहे हैं। विधायक जी को मालूम है कि बाहरी लोगों ने आदिवासी लोगों को सौ-दो-सौ रुपए देकर उनकी बड़ी-सी-बड़ी जमीन खरीद ली है। पिछले कुछ वर्षों से सरकार ने आदिवासियों की खरीदी हुई जमीन आदिवासी को वापस दिलवाने का प्रयास कर रही है। 'आदिवासी भूमि

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 113

मुक्ति मोर्चा' यह आदिवासियों के कल्याण के लिए बनाया है। लेकिन विधायक जी का धंदा खूब फल-फूल रहा है। विधायक जी के इस नाटक का शिकार 'एतवा' और रंगपुर के प्रसिद्ध 'डॉ. जयप्रकाश' बनते हैं। इस धंधे में मोटू और लंबू का सहयोग उन्हें प्राप्त है। दोनों रजिस्ट्री ऑफिस में जाकर किसका मकान किस गैर-आदिवासी ने खरीदा है इसका पता लगाकर विधायक जी दोनों का शोषण करते हैं। जिससे न तो आदिवासी का भला होता है और न उस व्यक्ति का जिसने जमीन खरीदी है। विधायक जी गगनांचल अलग राज्य स्थापित करने का मानस करते हैं। विधायक जी महुआ पर दबाव डालकर उससे मुकदमा वापस लेने के लिए खरीदना चाहते हैं। ऐसे अन्यायी, अत्याचारी, स्वार्थी, कठोर, तानाशाही आदि गुणों से युक्त विधायक जी यहाँ दिखाई देते हैं।

3.2.2.3 रहमतअली -

रहमतअली 'आदिवासी सांस्कृतिक विकास परिषद' के कोषाध्यक्ष हैं। रहमतअली मुसलमान हैं और गैर-आदिवासी भी हैं। रहमत अली दिखने में छोटे लगते हैं लेकिन वह बुद्धिमान और चतुर हैं। रहमत अली दूरदृष्टि रखनेवाले हैं। वे अपने फायदे के लिए दूसरों का इस्तेमाल करने में माहिर हैं।

3.2.2.4 लंबू और मोटू -

लंबू और मोटू दोनों आदिवासी युवक हैं। मोटू काफी हट्टा-कट्टा मोटा तथा दादा किस्म का है, पर वह था नाटा। लंबू काफी उँचा और उसके केश हब्शियों जैसे घुँघराल थे। लंबू और मोटू को विधायक जी ने संरक्षण दिया है। विधायक जी उनकी हर जायज-नाजायज माँगे पूरी करते थे। इसलिए वह 'आदिवासी महिला छात्रावास' में मनमानी करते थे। डॉ. महुआ का विरोध करके उसे वहाँ से हटाने का प्रयास करते हैं। महुआ पर सामूहिक बलात्कार करते हैं। वह दोनों गुंडागर्दी करते हैं। विधायक जी के पालतू कुत्ते हैं। लंबू और मोटू दोनों ही बिगड़े हुए आदिवासी युवक हैं।

3.2.2.5 फुलिया -

फुलिया 'आदिवासी महिला छात्रावास' की प्रधान सेविका है। वह सुशील, सरल और कर्तव्यनिष्ठ है। वह अपना काम पूरी ईमानदारी के साथ निभाती है। वह आदिवासी छात्राओं

का सदैव कल्याण करने की भावना रखती है। फुलिया ईमानदार और सेवाभावी सेविका है। फुलिया आदिवासी लड़कियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देती हैं। परिश्रमी, सेवाभावी, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ आदिवासी महिला है।

3.2.2.6 डॉ. सक्सेना -

डॉ. सक्सेना रंगपुर विश्वविद्यालय में मानवविज्ञान के व्याख्याता हैं। डॉ. सक्सेना आदिवासियों के चित्र टिप्पणियोंसहित विदेशी प्रकाशकों को उँचे दामों पर बेचकर करोड़पति बने हैं। डॉ. सक्सेना को आदिवासी लोग विशेषज्ञ मानते हैं। अब वे अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में ऊँचे पद पर काम करते हैं।

3.2.2.7 लुसी और कार्नेलिया -

लुसी और कार्नेलिया आदिवासी बालाएँ हैं। वे दोनों भी समाज विज्ञान में पढ़ती हैं। आदिवासी महिला छात्रावास की छात्राएँ हैं। लुसी और कार्नेलिया दोनों बुरी राह पर चलनेवाली लड़कियाँ हैं। लेकिन महुआ उन्हें सचेत करती है। महुआ के कारण दोनों को सही राह मिल जाती है।

3.2.2.8 डॉ. चौबे -

डॉ. चौबे बड़ा काम का आदमी है। डॉ. चौबे के द्वारा लेखक ने यहाँ बुद्धिजीवी लोगों पर करारा व्यंग्य किया है। डॉ. चौबे लोगों से रुपए लेकर उन्हें गारंटी के साथ पीएच्. डी. दिलाने में माहिर हैं। यदि किसी को कविता, कहानी, नाटक, व्यंग्य, अभिनंदन-पत्र की जरूरत हो तो डॉ. चौबे से संपर्क कीजिए। यदि किसी को व्यंग्य की आवश्यकता हो तो डॉ. चौबे को केवल एक पोस्टकार्ड डाल दो या फोन कर दो। ''अगर किसी को पीएच्. डी. या डी. लिट की थीसिस चाहिए तो वह डॉ. चौबे से मिल ले, उसे एक महीने के अंदर सजिल्द थीसिस प्राप्त हो जाएगी, वह भी घर बैठे।''[1] इस बात से पता चलता है कि डॉ. चौबे पैसे कमाने के लिए किस तरह के गलत काम करने में माहिर है इस उदाहरण से स्पष्ट होता है।

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 31

3.2.2.9 डॉ. सीमा ठाकुर -

डॉ. सीमा ठाकुर जैसे लोगों का भी पर्दाफाश किया है। क्योंकि डॉ. सीमा डरा-धमकाकर बलात्कारी युवतियों से गलत रिपोर्ट लिखने में माहिर है। वह गलत रिपोर्ट लिखकर रुपए कमाने में मशहूर है। वह स्त्री होकर भी किसी स्त्री को संरक्षण न देकर उसके जरिए रुपए कमाने का धंधा बनाया है।

3.2.2.10 हेलेना -

हेलेना छात्रावास में रहनेवाली लड़की है। सभी लड़कियाँ उसे 'चरकी' नाम से पुकारती हैं। हेलेना साहसी लड़की है। जब महुआ को सामूहिक बलात्कार युवक कर रहे थे तो वह केरोसीन तेल की डिबिया और माचिस ले जाकर उस विश्रामागार को चारों ओर से आग लगवा देकर उन अपराधियों को पकड़ती है।

अन्य गौणपात्रों के अंतर्गत डॉ. जयप्रकाश, एतवा, रंगिया, मनबोध, जैना मिंज (महुआ की सहेली), डॉ. नजमा, मनोजसिंह, डॉ. राजकिशोर पांडेय, डॉ. मदन त्रिवेदी (विभागाध्यक्ष) डॉ. विनोद सिन्हा, डॉ. ई. थॉमसन आदि गौण पात्र दिखाई देते हैं। यह पात्र भी कहीं-न-कहीं कथा को विकसित करने में सहायक बनते हैं।

3.3 कथोपकथन -

'हस्तक्षेप' उपन्यास में श्रवणकुमार गोस्वामी जी का संवाद चयन के पीछे एक उद्देश्य होता है। जैसे कि हस्तक्षेप में लेखक ने कथोपकथन के उपयुक्तता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, उद्देश्यपूर्णता, संबंधता, अनुकूलता, मनोवैज्ञानिकता तथा भावात्मकता आदि अनेक गुणों को लेखक ने 'हस्तक्षेप' में दिखाई देता है। बिरसी और महुआ, नेताजी और करमा, विधायक जी और महुआ, न्यायालय में महुआ और प्रतिवादी वकील, महुआ और करमा का कथोपकथन आदि अनेक संवाद एवं कथोपकथन 'हस्तक्षेप' में दिखाई देते हैं।

कथोपकथन एवं संवाद के अंतर्गत भावात्मक संवाद, आवेशात्मक संवाद, मनोवैज्ञानिक संवाद, नाटकीय संवाद, गंभीर संवाद, मार्मिक संवाद, तर्कपूर्ण संवाद और साथ-ही-साथ कहीं-कहीं संक्षिप्त संवाद एवं बड़े-बड़े संवाद को लेखक ने प्रस्तुत किया है। यहाँ निम्नलिखित कथोपकथन एवं संवाद प्रस्तुत हैं -

3.3.1 भावात्मक संवाद -

कथोपकथन के अंतर्गत लेखक ने भावात्मक संवाद भी प्रस्तुत किया है। माँ और बेटे के संवाद से भावात्मक संवाद प्रस्तुत होता है -

''यह क्या है ?'' बिरसी ने आश्चर्य के साथ पूछा।

''माँ, मुझे पाँच हजार रुपए का नकद पुरस्कार मिला है।''

''किस काम के लिए।''

''बाँसुरीवादन के लिए।''

''तू मुझसे झूठ क्यों बोल रहा है ?''

''माँ मैं झूठ नहीं बाल रहा हूँ।''

''नहीं, नहीं, तू मुझे झाँसा दे रहा है।''

''माँ, मैं सच बोल रहा हूँ। यह पुरस्कार स्वयं उपायुक्त महोदय ने हजारों लोगों के सामने मुझे दिया है।''[1] इस बात से भावात्मक संवाद लेखक ने यहाँ स्पष्ट किया है।

3.3.2 आवेशात्मक संवाद -

आवेशात्मक संवाद के अंतर्गत छात्राओं के साथ वार्तालाप करते हुए महुआ का संवाद यहाँ प्रस्तुत है -

''तुम सच बोल रही हो ?'' महुआ ने कार्नेलिया को सच बोलने का एक अवसर और दिया।

''जी दीदी।''

इस उत्तर से महुआ तिलमिला उठी। उसने आगे बढ़कर तकिया की खोली के भीतर से अंगरेजी की एक पत्रिका निकाली और पूछा- ''यह क्या है ?''

''कार्नेलिया और लूसी एकाएक काँपने लग गईं।''

''गंदी-गंदी पत्रिका पढ़ती हो और मुझे झाँसा देती हो कि कोर्स की किताब पढ़ रही थी तुम दोनों ! तुम मुझे क्या धोखा देगी ? तुम दोनों खुद को धोखा दे रही हो।''

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 42

महुआ कमरे से बाहर निकलते-निकलते अचानक रूक गई और बोली- ''कल सुबह को तुम दोनों मेरे पास आना। तुम्हारी जैसी लड़कियों के लिए यहाँ कोई जगह नहीं है।''[1]

इस बात से स्पष्ट होता है कि महुआ और कार्नेलिया लूसी का वार्तालाप आवेशात्मक दिखाई देता है।

3.3.3 नाटकीय संवाद -

कथोपकथन के अंतर्गत लेखक ने नाटकीय संवाद में भी पात्रों का वार्तालाप किया है। नाटकीय संवाद यहाँ प्रस्तुत हैं -

''नहीं, नहीं, पुरानी रचनाओं को लौटाने की कोई जरूरत नहीं है।''

''फिर उन रचनाओं को अपने पास रखने से लाभ भी क्या होगा ?''

''पंद्रह अगस्त को जब मुख्यमंत्री जी इस परिषद का उद्घाटन करने के लिए आएँगे, तब हम इन दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण रचनाओं की पांडुलिपियों की एक प्रदर्शनी लगाएँगे।''

''उससे क्या फायदा होगा ?''

''उससे बहुत फायदा होगा। हम लोग मुख्यमंत्री जी को यह दिखा सकेंगे कि इस परिषद ने आदिवासियों के प्राचीन साहित्य खोजने के लिए कितना काम किया है।''

''नेताजी, क्या यह केवल दिखवा नहीं होगा ?''

करमा, थोड़ा धैर्य रखो और देखो कि मैं कैसे और क्या करता चलता हूँ। कभी-कभी दिखवा करना भी बड़ी जरूरी हुआ करता है।''[2]

इससे स्पष्ट होता है कि करमा भगत और नेताजी का संवाद नाटकीय है। इसमें नेताजी सिर्फ दिखावा करना चाहते हैं। लेकिन वास्तव में आदिवासियों के लिए कुछ नहीं करते।

3.3.4 हास्य-व्यंग्यपूर्ण संवाद -

लेखक ने यहाँ हास्य-व्यंग्यपूर्ण संवाद का भी प्रयोग किया है। यह निम्नलिखित प्रस्तुत है -

'''क्यों नहीं हो सकती है ?'

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 22, 23
2. वही, पृ. 69

'मेरे खयाल से यह असंभव ही है।'

'फिर यह फर्स्ट क्लास फर्स्ट कैसे हो गई ?'

'अरे यही तो जाननेवाली बात है ! हेड ऑफ डिपार्टमेंट इस पर ढल गया था। यह बराबर उनकी सेवा में उनके घर पहुँच जाया करती थी।'

'क्या हेड कुँवारा था ?'

'नहीं ! वह तो बाल-बच्चे वाला था। मगर बच्चे बाहर पढ़ते थे।'

'बीबी तो रहती होगी घर पर ?'

'वह बुढ़िया हो चली थी।'

'अगर हेड की बीवी बुढ़िया हो चली थी तो क्या हेड़ बुढ़ा नहीं हुआ था ? वह भी तो बूढ़ा हो गया होगा।'

'बेवकूफ ! मर्द भी कभी बूढ़ा होता है क्या ? हेड हो तो गया था सत्तावन-अट्ठावन का, मगर खिजाब -विजाब लगाकर अपने को जवान बनाए रखता था।' ''[1]

इससे स्पष्ट होता है कि करमा भगत और डॉ. सिन्हा की बातचीत से हास्यव्यंग पूर्ण संवाद लेखक ने प्रस्तुत किया है।

3.3.5 गंभीर संवाद -

लेखक ने गंभीर संवाद भी प्रस्तुत किया है। वह निम्नलिखित हैं -

''बेटी, यह सच है कि जब-जब तुम्हारे बारे में कोई जानकारी मिली है, मैं बराबर यह सोचती रही कि इस बार आमछा को एक सही अधीक्षिका मिली है, मैं तो उस छात्रावास का हाल बहुत पहले से जानती हूँ। अब तुमसे क्या छिपाऊँ। 'लोग आमछा को सोनागाछी या दालमंडी समझते रहे हैं... ।' सबसे दुःख की बात यह है कि इस घिनौने कार्य में केवल गैर आदिवासी ही शामिल नहीं हैं, बल्कि इस इलाके के अधिकांश आदिवासी युवक महिलाएँ और राजनीतिज्ञ भी शामिल हैं। तुमने आमछा में अब तक जो काम किए हैं, उनकी मैं प्रशंसा करती हूँ और तुम्हारे साहस को प्रणाम भी करती हूँ।''

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 71

''काकी !'' महुआ की वाणी अवरूद्ध हो चली थी। इसके अतिरिक्त वह और कुछ नहीं बोल सकी। कपोलों पर लुढ़क आई दो बूँदों को उसने अपने रूमाल से सुखा दिया।''[1]

इससे स्पष्ट होता है कि महुआ और बिरसी की बातचीत गंभीर होती जा रही थी। यह मालूम होते ही बिरसी दूसरे विषय की ओर मोड़ जाती है।

3.3.6 व्याख्यात्मक संवाद -

लेखक ने व्याख्यात्मक संवाद भी प्रस्तुत किया है। वह निम्नलिखित हैं -

'' 'बलात्कार !'

'कितना भयावह है यह शब्द !'

हर शब्द दोधारी तलवार होता है। दोधारी तलवार इधर भी कटती है और उधर भी। यह दहिने भी वार करती है और बाएँ भी। यह बलात्कार शब्द भी दोनों तरफ वार करता ही है, साथ-साथ वह नारी को बीच से काटकर दो टुकड़े में बाँट भी देता है। उसके वार से पुरुष प्रभावित नहीं हो पाता। मगर नारी तो दो टुकड़ों में ऐसी कटती है कि उसे न तो समाज ही स्वीकार करना चाहता है और न उसके स्वजन-परिजन ।

बलात्कार के समय जो यातना नारी झेलती है, उसका अनुभव पुरुष समाज कभी नहीं कर सकता। उसके लिए यह संभव भी नहीं है। वह चाकू जो होता है। हर स्थिति में विजेता बनने को वरदान प्राप्त। कहते भी हैं कद्दू पर चाकू गिरे या चाकू पर कद्दू गिरे बात एक ही है। हर स्थिति में कटना तो कद्दू को ही है।''[2]

यहाँ लेखक ने बलात्कार से पीड़ित नारी की स्थिति का वर्णन व्याख्यात्मक पद्धति से किया है।

3.3.7 मनोवैज्ञानिक संवाद -

कथोपकथन के अंतर्गत मनोवैज्ञानिक संवादों का भी वर्णन किया है। वह निम्नलिखित है -

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 64
2. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 259

"पहला मन फिर सामने आकर बोलने लग जाता है- 'महुआ ! तू एक बात भूल गई। आज की दुनिया में सत्य न तो कोई सुनना चाहता है और न कोई सत्य को पचाना चाहता है। लोग सच बोलनेवाले को बेवकूफ मानते हैं। तू क्या सोचती है कि अपनी सच्चाई बताकर तूने अपनी मौसी या करमा को अपना प्रशंसक बना लिया है ? यदि तू ऐसा सोच रही है तो यह केवल तेरी गलतफहमी है। तेरी मौसी कोई देवी नहीं है। तेरा करमा भी कोई महात्मा गाँधी नहीं है। दोनों माँ-बेटे हाड़-माँस के बने सामान्य प्राणी हैं। तुम्हारी रामकहानी को क्या दोनों माँ-बेटे अपने गले के नीचे उतार भी सकेंगे ? क्या अब तक तुझे दोनों में से किसी का भी कोई उत्तर मिला ?

दूसरे मन ने कहा - 'नहीं, उत्तर तो नहीं मिला है अब तक। लेकिन इसका अर्थ यह तो नहीं है...'

'तो क्या अर्थ है ?' पहले मन ने व्यंग्य के साथ पूछा।

'हो सकता है कि मौसी अस्वस्थ हो।' दूसरे मन ने संभावना व्यक्त की।

'और करमा ?' शंकालु पहले मन ने पूछा।

'वह तो बड़ा शर्मीला है। वह तो तुझे रास्ते पर स्कूटर से उतारकर भाग जाता है। तेरे बार-बार अनुरोध करने पर भी वह आमछा के भीतर नहीं आता।' दूसरे मन ने कहा।"[1]

लेखक ने यहाँ महुआ के अंतर्मन और बाह्य मन का द्वंद्व चित्रित किया है।

3.3.8 मार्मिक संवाद -

कथोपकथन एवं संवाद के अंतर्गत लेखक ने मार्मिक बातों से भी संवादों का वर्णन किया है। वह निम्नलिखित हैं -

"'संभव है। पर हम यह जमीन बेच नहीं सकते।"

"क्यों काकी ?"

'क्योंकि आदिवासी की जमीन खरीदने पर सरकार ने रोक लगा दी है।'

'आप किसी आदिवासी के हाथ तो यह जमीन बेच ही सकती हैं'

"बेटी, गैर आदिवासी इस जमीन की कीमत यदि एक रुपया देगा तो आदिवासी इसकी कीमत एक पैसा लगाएगा।"

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 157

''ऐसा क्यों काकी ?''

''क्योंकि अब आदिवासी भी होशियार हो गए हैं। वे अब जानते हैं कि यह जमीन उनके सिवा कोई दूसरा नहीं खरीद सकता।''

''महुआ कुछ सोचने लग गई। उसने कहा - 'क्या एक आदिवासी के द्वारा दूसरे आदिवासी का यह शोषण नहीं होगा ?''

''यह तो है ही बेटी। आजकल यही हो भी रहा है। संपन्न आदिवासी धड़ल्ले से अपने ही आदिवासी भाइयों की कीमती जमीनें ठिकरे के मोल खरीद रहे हैं।''[1]

इस संवाद से स्पष्ट होता है कि आदिवासी ही आदिवासियों का शोषण कर रहे हैं। सधन आदिवासी निर्धन आदिवासी का शोषण करता है। यह उदाहरण के द्वारा लेखक ने मार्मिकता से स्पष्ट किया है।

संवाद एवं कथोपकथन के अंतर्गत लेखक ने उपदेशात्मक संवाद, आलंकारिक संवाद, प्रेममय संवाद, तर्कपूर्ण संवाद आदि संवादों का भी वर्णन प्रस्तुत किया है।

3.4 देशकाल तथा वातावरण -

देश, काल तथा वातावरण उपन्यास का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। उपन्यासकार देशकाल तथा वातावरण के अंतर्गत घटना, प्रसंगों, पात्रों की मानसिकता, प्रकृति चित्रण, राजनीतिक वातावरण, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा परिस्थितियों का चित्रण 'हस्तक्षेप' में किया है।

3.4.1 आंतरिक वातावरण -

'हस्तक्षेप' उपन्यास में लेखक ने देश, काल तथा वातावरण को चित्रित करते समय आदिवासियों के आंतरिक वातावरण को प्रस्तुत किया है। मानवविज्ञान या एथ्रोपोलॉजी की उपयोगिता के बारे में महुआ और करमा में बहस चल रही है। मानव विज्ञान ने आदिवासियों के अध्ययन के नाम पर अपना झंडा फहरा दिया है सारे विश्व में। लेकिन उससे क्या आदिवासियों का भला हो सकता है क्या ? तथाकथित समाज के सभ्य लोगों ने आदिवासियों का उपभोग्य किया है। उन्होने इतना बता दिया है कि अब आदिवासी लोगों से नफरत करने की जरूरत नहीं है तो उन्हें रेड

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 63

इंडियनों की तरह मौत के घाट उतारने की आवश्यकता भी नहीं है। आदिवासियों को इस लोगों ने अजायबघर बना दिया है। संस्कृति के नाम पर आयोग बनाओ, सम्मेलन करो, सेमिनार करो और दुनिया की यात्रा करना और एक दिन विशेषज्ञ के नाम से सारे विश्व में आदिवासियों के विशेषज्ञ मान लिया जाएगा। यह तथाकथित लोग आदिवासी को 'माल' समझकर उसको जहाँ-तहाँ क्रय-विक्रय करने का प्रयास कर रहे हैं। इस तरह देश काल वातावरण के अंतर्गत आदिवासियों का आंतरिक वातावरण लेखक ने चित्रित किया है।

3.4.2 घटनाओं एवं परिस्थिति का चित्रण -

देशकाल तथा वातावरण के अंतर्गत लेखक ने घटनाओं एवं परिस्थितियों का चित्रण किया है। यहाँ लेखक ने आदिवासियों को अपने जाल में नेताजी, विधायक जी, रहमतअली, राजनीतिज्ञ लोग किस तरह फँसाते हैं इस घटना का चित्रण करमा के द्वारा लेखक ने प्रस्तुत किया है। नेताजी के द्वारा करमा को ब्लैकमेल करने की घटना लेखक ने अत्यंत रोचक ढंग से चित्रित किया है। विधायक जी नेताजी को सालाना पाँच लाख का अनुदान देने का वादा करके करमा को ब्लॅकमेल करना चाहते हैं। नेताजी करमा को रहमतअली द्वारा बुलाने के लिए भेजते हैं और करमा को झूठ कहते हैं कि मुझे ब्रेनट्यूमर की बीमारी हो गई है। जल्द-से-जल्द ऑपरेशन करना जरूरी है, जल्दी से ऑपरेशन नहीं हुआ तो बचने की संभावना नहीं है, ऐसा बताते हैं। ठीक उसी समय नेताजी के यहाँ विधायक जी का फोन आता है और वह फोन करमा उठाता है। फोन पर विधायक जी की बात सुनकर करमा चकित हो जाता है। यहाँ करमा के माध्यम से महुआ को मुकदमा वापस लेने के लिए करमा को ब्लॅकमेल करना चाहते हैं। लेकिन करमा के सजगता के कारण ऐसा नहीं होता।

3.4.3 पात्रों की मानसिकता का चित्रण -

लेखक ने देशकाल तथा वातावरण के अंतर्गत पात्रों की मानसिकता का वर्णन किया है। जब नेताजी करमा को उसके घर में मिलने आते हैं और बिरसी भगत को देखकर नेताजी देर तक वहाँ नहीं ठहरना चाहते। तब करमा की मानसिकता का चित्रण करते समय कहते हैं- ''करमा एक बार फिर अटकलबाजी और शंका के दलदल में धँसने लग गया। संदेह के कीचड़ में

धँसते-धँसते वह उस अतल गहराई तक जा पहुँचा, जहाँ उसे यह भी शक होने लगा कि नेताजी और उसकी माँ के बीच जरूर...।''[1] करमा की असंदिग्ध मानिकसता का वर्णन लेखक ने किया है। साथ-ही-साथ जब महुआ अपने पूर्वघटित प्रसंगों का करुण दर्द पत्र द्वारा बिरसी को कहती है तब बिरसी वह पत्र करमा को पढ़ने देती है तो करमा की मानसिक संघर्ष शुरू होती है। वह कहता है कि ''यदि मेरे जीवन में वैसी स्थितियाँ आती, तो मैं निश्चित रूप से आत्महत्या कर बैठता।''[2] इससे स्पष्ट है कि करमा को अभी अनुभूति, सूक्ष्म विचारों की, गहन चिंतन आदि की जरूरत है। बुधनी नामक आदिवासी लड़की का पादरी द्वारा दैहिक शोषण किया जाता है। इस तरह महुआ पर बलात्कार होता है तो उसको सहानुभूति दिलाने के बदले झूठा प्रदर्शन करनेवाले मीडिया के लोग, मुख्यमंत्री, विधायक जी जैसे लोगों की घृणा करने लगती है। बुद्धिजीवि लोगों पर भी करारा व्यंग्य प्रहार किया है। साथ-ही-साथ बुद्धिजीवी लोगों की मानसिकता, मुख्यमंत्री, विधायक जी, राजनीतिज्ञ लोगों की घिनौने काले कारनामें व्यापारों से पीड़ित आदिवासी लोगों का चित्रण किया है।

3.4.4 प्रकृति चित्रण -

'हस्तक्षेप' में प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण लेखक ने किया है। गगनांचल धरती के इलाके में यदि एक तरफ जंगल है तो, दूसरी तरफ मनोहारी दृश्यों का खजाना है। आदिवासियों ने एक तरफ यहाँ नदियों का कल-कल निनाद है तो दूसरी तरफ यहाँ आदिवासी मधुर संगीत है। गगनांचल की धरती के भीतर दौलत छिपी हुई है। यहाँ की धरती पर रहनेवाले लोगों के पास एक बहुत बड़ी संपदा है- उनकी आदिवासी संस्कृति है। चारों ओर एक भयावह सन्नाटा व्याप्त है। आस-पास न कोई पशु नजर आता है न आदमी। शंख नदी का पानी शांत है। ''पहाड़ी नदियों की यह विशेषता होती है कि ऊपर से वे शांत-गंभीर लगती हैं, पर उनके भीतर अंतर्धारा प्रवाहित होती रहती है। जो पहाड़ी नदियों की इस संस्कृति से परिचित नहीं होते, वे अकसर धोखा खाया करते हैं और कभी-कभी ऐसे लोग अपनी जान भी गँवा बैठते हैं।''[3] दुर्गम प्रदेशों में आदिवासी लोग किस

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 103
2. वही, पृ. 145
3. वही, पृ. 65-66

तरह जीवनयापन करते हैं। वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य वालुक राशिमय ही दिखाई देता है। गगनांचल, रामडेरा, रंगपुर, शंखनदी, गोंदली इस्पातनगर आदि अनेक प्रदेशों एवं नदियों का प्राकृतिक वर्णन किया है।

3.4.5 राजनीतिक वातावरण -

आदिवासी लोगों का राजनीतिज्ञ लोग किस तरह फायदा उठाते हैं इसका मार्मिक चित्रण यहाँ किया है। बिरसी करमा को बताती है तुम्हें मालूम नहीं, राजनीतिक गणित पुराना ही है। इसका प्रयोग हर युग में होता है। राजनीतिक गणित की न तो कोई किताब होती है न यह राजनीति गणित कहाँ पढ़ाया भी नहीं जाता। जीवन के कटु-मधुर अनुभूति के सहारे ही इस गणित का तुम ज्ञान प्राप्त कर सकते हो। संवाददाता तथा फोटोग्राफर को छपवाने के लिए एक गरम मसाला मिलता है। मीडिया के लोग छात्राओं को रस ले-लेकर बेहूदे और बेतुके प्रश्न पूछते हैं और छायाकार ऐसी तसवीरें उतारने का प्रयास करते हैं कि जिससे उनको अच्छी कमाई हो। यहाँ लेखक ने मीडिया पर भी तीखा प्रहार किया है। तथाकथित राजनेता लोग अपराधियों को संरक्षण देते हैं। पीडित एवं असहायक लोगों का असामाजिक तत्त्वों के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक रूप से शोषण किया जाता है। रंगपुर में आतंक का वातावरण बनाया गया है। यहाँ न कोई कानून है न कोई पुलिस, यह शहर असामाजिक राजनीतिज्ञों ने गुंडों के हवाले कर दिया है । यह गुंडे अब शहर में ही नहीं सार्वजनिक जगहों पर भी अपना आतंक जमाये बैठे हैं। यहाँ किसी को भी सुरक्षा नहीं है। यहाँ का प्रशासन तथा सरकार अंधी, बहरी और गूँगी है। इस तरह यहाँ का राजनीतिक वातावरण का वर्णन किया है। एक बार तो अखबार में यह समाचार छपा था कि साधु जैसे राजनेता ने पच्चहत्तर वर्ष की उम्र में अठारह साल की आदिवासी लड़की से बारहवी शादी की है। आदिवासी प्रदेश में हर पार्टी का काम है- कमाना, खाना, शराब पीना और मौजमस्ती करता है। इस प्रकार राजनीतिक वातावरण चित्रित किया है।

3.4.6 सांस्कृतिक वातावरण -

'हस्तक्षेप' में लेखक ने सांस्कृतिक वातावरण का भी चित्रण किया है। आमतौर पर आदिवासी लड़कियों को कोई भी सांस्कृतिक कार्यक्रम हो या समारोह में नाचना अनिवार्य माना

जाता था। लेकिन जब महुआ चक्रवर्ती अधीक्षिका बनकर आती है तब से यह आदिवासी लड़कियों को सांस्कृतिक कार्यक्रम में भेजना बंद करती है। नेताजी और रहमतअली ने महात्मा गांधी उच्च विद्यालय के मैदान में एक विराट सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करते हैं। इस आयोजन में आदिवासी नाच-गान के साथ-साथ कवि सम्मेलन का भी आयोजन करते हैं। सात बजे से ही महात्मा गांधी उच्च विद्यालय के मैदान में मूँगफली, चना, चाट, चाय, पान-बीड़ी शरबत, सॉफ्टी, खैनी आदि बेचनेवालों की भीड़ लगी है। देखते-ही-देखते वहाँ मेले का वातावरण तैयार हो गया है। मंच पर कुर्सियाँ लगी हैं, साथ में मंच पर दो माइक्रोफोन लगे हैं। मंच पर सामने एक गोल घेरा बनाया गया है जहाँ 'नृत्य' होने के लिए सुविधाजनक हो। मंच पर दो माइक्रोफोन लगाए थे। टेप रेकॉर्डर पर देशभक्ती गीत बज रहा है- 'जिस देश में गंगा बहती है...' दर्शकों तथा श्रोताओं का मैदान में आना शुरू हो गया था। बच्चे, बूढ़े, जवान, लड़कियाँ, औरतें, वृद्धाएँ, असामाजिक तत्त्व जेबकतरे, हुडदंग मचानेवाले, युवतियों को छेड़छोड़ करनेवाले सड़क छाप मजनू सभी दर्शकों तथा श्रोताओं से मैदान भर गया है। आधी रात हो गई लेकिन श्रोता टस-से-मस होने का नाम भी नहीं ले रहे थे। आदिवासी नृत्य, मांदर, नगाड़े, बाँसुरी झाल आदि की मिश्रित ध्वनि लोगों को मंत्रमुग्ध किया था। करमा भगत की बाँसुरी वादन से तो श्रोतागण लयबद्ध होकर हिलने-डुलने लग गए थे। साथ-ही-साथ लेखक ने गणतंत्र दिवस दिल्ली में सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करने के लिए करमा के साथ एक नृत्य मंडली भेजते हैं, जिसमें दस युवक और यवुतियाँ भी होती हैं। इस नाटक मंडली की सुरक्षा के लिए नेताजी और रहमतअली भी उनके साथ दिल्ली जाते हैं। गणतंत्र दिवस पर भारत वर्ष के सभी राज्य के लोग अपनी कला, संस्कृति की झलक पेश करने के लिए दूर-दूर से आते हैं। दिल्ली में संस्कृति के नाम पर मेला लगा है। करमा को लगता है कि यह संस्कृति के नाम पर शुद्ध प्रदर्शन एवं दिखावा लगता है। यह प्रदर्शन ही नहीं - शुद्ध तमाशा है ऐसा करमा को दिल्ली के गणतंत्र दिवस का माहौल देखकर लगने लगता है। यहाँ सोनी नाम के लड़की के साथ एक रात होटल में रहने के लिए संस्कृति विभाग का उच्च अधिकारी नेताजी और रहमत अली को उनकी 'आदिवासी सांस्कृतिक विकास परिषद' को सालाना पाँच लाख अनुदान देने का लालच दिखाता है। लेकिन करमा की सजगता के कारण सोनी

नाम की लड़की की इज्जत बच जाती है तथा रहमतअली और नेताजी को उस अधिकारी का रोष सहना पड़ता है। इस तरह यहाँ सांस्कृतिक वातावरण का वर्णन किया है।

3.4.7 सामाजिक वातावरण -

आदिवासियों में पिछड़ापन एवं निश्चछल निस्वार्थी वृत्ति के लोग होते हैं। आदिवासी लोगों की आदत है कि जब तक उन्हें कोई बहकाता नहीं या किसी काम के लिए जाग्रत नहीं करता तब तक अपनी इच्छा से वे लोग कोई भी कदम उठाना पसंद नहीं करते। आदिवासियों को लोग सेवा के नाम पर फँसाते हैं। आदिवासियों के रहन-सहन के बारे में बताते हुए आदिवासी जहाँ ईमानदार और मेहनती होता है, वहाँ शराब देखते ही ऐसा पिघलता है कि उससे कुछ भी काम करवाया जाता है। आदिवासियों में 'भगत' को यहाँ पुराहित के रूप में 'पाहन' कार्य करता है। आदिवासी लोग भूमिहीन होकर दर-दर की ठोंकरे खा रहे हैं। इस्पातनगर के आदिवासी भूखे और नंगे हैं। राजनेता लोग रैली में सम्मिलित करने के लिए दूर-दराज के गांवों से ट्रकों पर औरतों, बच्चों और मर्दों को चिलचिलाती धूप, तेज बारिश और हाड़ को भी कंपा देनेवाली सर्दी के दौरान नंग-धडंग आदिवासियों को लाते हैं। आदिवासी बच्चे औरतें और मर्दे भूख और प्यास से तड़पते हैं लेकिन उनकी तरफ कोई भी ध्यान नहीं देता। सिर्फ अपना स्वार्थ साधने के लिए इस तरह के हाथकंडे अपनाते हैं- यह राजनीतिज्ञ लोग। शराब उनकी बहू-बेटी और उनकी मातृभूमि भी छीन लेती है। आदिवासियों के दुर्दशा का प्रमुख कारण है- शराब। महुआ यहाँ बताती है कि मदिरा छोड़े बिना आदिवासियों का शोषण कभी भी बंद नहीं होगा। इस तरह लेखक यहाँ सामाजिक वातावरण चित्रित किया है। आदिवासियों में कृषि के प्रति लगाव होता है। आदिवासी कितना भी शिक्षित हो उसे कृषि के प्रति बेहद लगाव होता है। यहाँ लेखक ने करमा और बिरसी भगत के माध्यम से बताया है। आदिवासियों के लोकगीत भी लेखक ने सिर्फ एक पंक्ति में लिखा है- ''आइज आलयँ हमर घरे गोतिया...।''[1] यहाँ आदिवासी छात्राएँ अपनी अधीक्षिका महुआ का स्वागत अपने छात्रावास में करती दिखाई देती हैं। इस तरह के वातावरण का लेखक ने यहाँ चित्रण किया है।

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 191

3.5 भाषाशैली -

उपन्यास के तत्त्वों में भाषाशैली का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस उपन्यास में लेखक ने सहज, रोचक, संक्षिप्तता, सरल, वर्णनात्मक, संवादात्मक, प्रश्नार्थक, पत्रात्मक आदि अनेक भाषाओं के प्रयोग किया है। भाषाशैली के अंतर्गत शब्द के विभिन्न रूप, तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, संस्कृति शब्द, उर्दू शब्द, आदिवासी शब्द, द्विरूक्त शब्द, अपशब्दों का प्रयोग, मुहावरों और कहावतों का प्रयोग, फिल्मी गीत एवं आदिवासी गीतों का प्रयोग आदि अनेक बातों का प्रयोग 'हस्तक्षेप' में दिखाई देता है, वह निम्नलिखित है -

3.5.1 शब्द के विभिन्न रूप -

लेखक ने शब्दप्रयोग के विभिन्न रूपों का प्रयोग किया है। तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, अरबी, फारसी, उर्दू, आदिवासी, तुर्की, अंग्रेजी, द्विरूक्त, अपशब्द और निरर्थक शब्द आदि अनेक शब्दों का प्रयोग किया है।

3.5.2 तत्सम शब्द -

'हस्तक्षेप' उपन्यास में निम्नलिखित तत्सम शब्दों का प्रयोग पाया जाता है - आकाशवाणी, पुरस्कार, थैली, विवाह, विद्यालय, आशीर्वाद, अभिवादन, राजनीति, साहित्य, स्नान आदि अनेक तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है।

3.5.3 तद्भव शब्द -

'हस्तक्षेप' उपन्यास में निम्नलिखित तद्भव शब्द पाए जाते हैं - 'पिता', 'नजर', 'आँख', 'चेहरा', 'हाथ', 'पुस्तकालय', 'कार्यालय', 'किसान', 'सेवा', 'घर' आदि अनेक तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है।

3.5.4 संस्कृत शब्द -

उपन्यास में निम्नलिखित संस्कृत शब्द पाए जाते हैं - 'अंकवार', 'गणित', 'कलाकार' आदि।

3.5.5 उर्दू शब्द -

'काम', 'अदालत', 'कानून', 'औरत', 'गरीब', 'खत', 'मदद', 'शराब', 'रंग', 'बदल', 'जंगल', 'चाय', 'आदत', 'शबाब', 'कबाब', 'गोश्त', 'जहन' आदि अनेक उर्दू शब्द पाए जाते हैं।

3.5.6 अंग्रेजी शब्द -

'हेडमास्टर', 'हॉस्टल', 'प्रोग्राम', 'थीसिस', 'स्टेशन', 'फोटोग्राफर', 'नोट', 'हेड ऑफ डिपार्टमेंट', 'स्कूटर', 'रजिस्ट्री', 'ऑफिस', 'ब्रीफकेस', 'प्रेस', 'कोटेशन', 'रिहर्सल', 'इंटरव्यू', 'डाँस पार्टी', 'स्टुडियो', 'कवर फाईल', 'एंथ्रोपोलॉजी', 'सेमिनार', 'रेड इंडियन', 'मनी ऑर्डर', 'सिनेमा' आदि अनेक अंग्रेजी शब्दों का उपन्यास में प्रयोग दिखाई देता है।

3.5.7 आदिवासी शब्द -

'इसटूल', 'हिएँ', 'टीभी', 'भोरे', 'एतना', भिलेन', 'वास्ते', 'डॉगडर', 'खुस होके', 'बकसीस', 'टुको', 'शाडी', 'इनभरसिटी', 'परोफेसर', 'पोलटिक्स', 'सुतल', 'टंकिया', 'मसल', 'इंकार', 'तैश', 'तीर-धनुष', 'यरिया लोटा', 'ढोल-मांदर', 'नगाड़े-तुरही', 'होसियारे', 'झमेला', 'पइदा', 'अकड़', 'केने-केने' आदि अनेक आदिवासी शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है।

3.5.8 द्विरूक्त शब्द -

'नीली-नीली', 'केने-केने', 'अभी-अभी', 'सोचते-सोचते', 'बैठे-बैठे', 'दाएँ-बाएँ', 'कुछ-कुछ', 'ऐसे-ऐसे', 'पूरी-पूरी', 'चुप-चुप', 'बोलते-बोलते', 'बुझ-बुझा-सा' आदि अनेक द्विरूक्त शब्दों का प्रयोग उपन्यास में पाया जाता है।

3.5.9 अपशब्दों का प्रयोग -

'साली', 'छम्मक छल्लो', 'चेलियों', 'छान', 'साली बंगालिन', 'चीर-हरण', 'रंडी', 'चरित्रहीन', 'घाघ', 'थका-माँदा', 'सठियाया' और 'चालू', 'हाय ! मार डाला...', 'क्या अदा है...' आदि अनेक अपशब्दों का प्रयोग किया है।

3.5.10 मुहावरों का प्रयोग -

'काटो तो खून नहीं', 'कोल बूझे नइ, पत्थर सीझे नइ', 'हम दोनों के पौं बारह हैं', 'लोहे को लोहे से काटना', 'नौ-दो ग्यारह हो गया', 'दिन दूनी रात चौगुनी', 'काठ के उल्लू', 'न घर का न घाट का', 'बिछ-बिछ जाएगी', 'शिकार की टोह में बैठा रहता है', 'चौर-चौर मौसेरे भाई' आदि अनेक मुहावरों का प्रयोग लेखक ने किया है।

3.5.11 कहावतों का प्रयोग -

'वीरभोग्या वसुंधरा...', 'शैतान को आपने याद किया और शैतान खुद ही हाजिर हो गया', 'हाथी चले बाजार तो कुत्ता भूँके हजार', 'गड़-बड़ झाला', 'चौर-चौर मौसरे भाई', 'सबसे पहले जान की चिंता कीजिए और बाद में जहान की' आदि अनेक कहावतों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है।

3.5.12 फिल्मी गीत एवं आदिवासी गीत का प्रयोग -

आदिवासी गीत - 'आइज आलयँ हमर घरे गोतियाँ...'

फिल्मी गीत - 'बहारो, फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है...'

'झुकती है दुनिया झुकानेवाला चाहिए...'

आरती - ''ओम जय जगदीश हरे...

प्रभुज जय जगदीश हरे...

भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे....'

देशभक्ति गीत - 'हम उस देश के वासी हैं,

जिस देश में गंगा बहती है...।'

श्रवणकुमार गोस्वामी जीने सभी प्रकार की भाषाओं का प्रयोग किया दिखाई देता है।

3.6 शैली -

भाषाशैली के अंतर्गत भाषा के बाद शैली आती है। उपन्यास के तत्त्वों के अंतर्गत शैली को भी अनन्य साधारण महत्त्व है। डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र के अनुसार ''वास्तव में

भावाभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है और इस रस माध्यम के प्रयोग की रीति या विधि शैली है।"[1]
अंतः लेखक ने उपन्यास में अनेक शैलियों का प्रयोग पाया जाता है। वह निम्नलिखित है -

3.6.1 वर्णनात्मक शैली -

'हस्तक्षेप' उपन्यास में लेखक ने वर्णनात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। वर्णनात्मक शैली के अंतर्गत आदिवासी लड़को-लड़कियों का, प्रकृति चित्रण का, महानगरीय जीवन का, औद्योगिकीकरण का, राजनीति का, आदिवासी संस्कृति का, आदिवासी नेता लोगों के कारनामों का, प्राकृतिक सौंदर्य चित्रण का, बलात्कारसे पीड़ित महुआ का, कानून की विधि-निषेधों का, छोटे और बड़े संवादों से भी वर्णनात्मक आदिवासियों की तरफ राजनेता पुलिस, विधायकजी जैसे लोगों को देखने की दृष्टि का वर्णन आदि अनेक बातों का वर्णन का प्रयोग वर्णनात्मक शैली में लेखक ने किया है। जैसे- रैली !

दूर-दराज के गाँवों से ट्रकों पर औरतों, बच्चों और मर्दों को लाँघकर रंगपुर लाया जाता। चिलचिलाती धूप, तेज बारिश और हाड़ को कंपा देनेवाली सर्दी के दौरान रैली में नंग धडंग आदिवासी अपने-अपने हाथों में तीर-धनुष, टाँगी, फारसा, बल्लम आदि हाथियारों के साथ गाते-बजाते हुए शामिल होते हैं और रूक-रूककर नारा लगाते- गगनांचल अलग राज्य... अलग राज्य बनाना होगा... अलग राज्य देना होगा...। जुलूस में कोई नगाड़ा पीट रहा होता, कोई मांदर पर थाप दे रहा होता, कोई घंटा ही बजा रहा होता। औरतें आदिवासी भाषा के गीत गाते हुए बढ़ती। ऐसा लगता कि यह रैली नहीं, बल्कि किसी उत्सव का जुलूस चला जा रहा है।

लेखक ने वर्णनात्मक शैली के द्वारा यह बताना चाहते हैं कि आदिवासी लोगों का रैली के नाम पर किस तरह की हालत की जाती है, इसकी व्यथा मार्मिक वर्णनात्मक शैली से लेखक ने प्रस्तुत किया है।

3.6.2 विश्लेषणात्मक शैली -

हस्तक्षेप मे लेखक ने विश्लेषणात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। विश्लेषणात्मक शैली के अंतर्गत लेखक ने आदिवासियों का शोषण किस तरह किया है। 'आदिवासी' के बारे में किया गया वर्णन हो या संस्कृति के नाम पर नेताजी विधायक जी जैसे लोगों

---

1. दुर्गाशंकर मिश्र - अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृ. 34

के स्वार्थ के लिए किए अमानवीयता का वर्णन आदि विश्लेषणात्मक वर्णन हैं। साथ-ही-साथ जब महुआ बलात्कार की शिकार बन जाती है तब कानूनी कार्यवाही के बीच किया गया वर्णन भी विश्लेषणात्मक ही है। जैसे कि -

"योर ऑनर, विद्वान पब्लिक प्रोजेक्यूटर ने अपने जानते, अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार बहुत अच्छी बहस करने की कोशिश की है। उनके बारे में पहले मेरी यह धारणा थी कि वह एक योग्य एडवोकेट है। वह न्यायालय में केवल उतनी ही बातें कहते हैं, जितना बोलना बहुत आवश्यक होता है।"[1]

'डॉ. महुआ चक्रवर्ती यानी श्रीमती तथा कुमारी डॉ. महुआ चक्रवर्ती...' लोग पुनः हँसने लग गए।"[2]

"न्यायाधीश महोदय ने अदालत की कार्यवाही स्थगित करने की घोषणा कर दी और वह स्वयं अपने कक्ष में चले गए।"

"प्रतिवादी पक्ष के लोगों ने वकील साहब को चारों तरफ से घेर लिया। सभी वकील साहब की प्रशंसा करने लग गए - "वाह! क्या बहस की है आपने! आपने तो मामला ही उलटकर रख दिया!"

"वकील साहब मंद-मंद मुस्कराते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ने लग गए।"[3] यहाँ लेखक ने कानूनी कार्यवाही का वर्णन करते हुए विश्लेषणात्मक शैली का वर्णन किया है।

3.6.3 चेतनाप्रवाह शैली -

'हस्तक्षेप' में लेखक ने चेतनाप्रवाह शैली का वर्णन किया है। आदिवासी लड़कियों में आत्मसम्मान जाग्रत करके अपने अस्तित्व के बारे में चेतना निर्माण किया है। अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने की आदिवासी लड़कियों में चेतना प्रवाह शैली का प्रयोग लेखक ने किया है। आदिवासी लोगों में भी राजनीतिज्ञ, बुद्धिजीवी, विधायकजी, पुलिस एवं गैर-आदिवासी जैसे लोगों द्वारा शोषण के विरूद्ध संघर्ष करने की चेतना करमा के माध्यम से लेखक ने किया है।

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 253-54
2. वही, पृ. 255
3. वही, पृ. 258

महुआ ने आदिवासी लोगों के प्रति आत्मीयता होने के कारण उनमें चेतना जाग्रत करने का कार्य किया है। लेखक ने यहाँ नारी चेतना की बात उठाई है। जैसे की ''नारी का सबसे बड़ा शत्रू यदि कोई है तो वह स्वयं नारी है। इस नारी-घाती, शिशुघाती और बलात्कारी समाज से लड़ने के पहले नारी को स्वयं नारी से ही लड़ना होगा। अगर वह इस लड़ाई में जीतती है, तभी वह इस समाज को भी बदल सकती है अन्यथा कभी नहीं।''[1] इससे स्पष्ट है कि लेखक ने महुआ के माध्यम से नारी में चेतना जाग्रत करने का प्रयास किया है।

3.6.4 संवादशैली -

'हस्तक्षेप' में लेखक ने अनेक प्रकार की शैलियों के साथ-साथ ही प्रश्नार्थक शैली का प्रयोग कई बार किया है। एक संवाददाता महुआ का साक्षात्कार प्रश्नार्थक शैली में वर्णन किया है। जैसे की -

''प्रश्नकर्ता - आमछा में कोई भी महिला यहाँ की अधीक्षिका बनकर आने को तैयार नहीं थी, क्या यहाँ आने के पहले इस बात की जानकारी आपको थी ?

महुआ - हाँ, इस बात की जानकारी मुझे थी।

प्रश्नकर्ता - इसके बावजूद अपने आमछा की अधिक्षिका बनना क्यों और कैसे स्वीकार कर लिया ?

महुआ - अधिकारियों ने मुझसे विशेष अनुरोध किया की मैं इस कार्य को स्वीकार कर लूँ और मैंने यहाँ आना स्वीकार कर लिया। यह तो आपको 'कैसे' का उत्तर हुआ। मैं यहाँ क्यों आई, इसका उत्तर मैं अभी नहीं देना चाहती। मैं चाहूँगी कि इसका उत्तर मेरे बदले में दूसरे दें।''[2] लेखक ने महुआ और प्रश्नकर्ता के बात-चीत के द्वारा प्रश्नार्थक शैली का वर्णन किया है।

3.6.5 पत्रात्मक शैली -

'हस्तक्षेप' उपन्यास में पत्रात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। पत्रात्मक शैली में महुआ को बिरसी ने प्रशंसा परक लिखे गए पत्रात्मक शैली में लिखा है। महुआ को जब मौसी

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 232
2. वही, पृ. 44

करमा से शादी करने के लिए उसका हाथ माँगना चाहती है तब महुआ उसे कुछ भी नहीं कहती तब अपनी पूर्वघटित दर्दनाक पत्र से लिखकर भेजती है। वहाँ भी पत्रात्मक शैली का वर्णन किया है। अमेरिका वर्ल्ड कल्चर सेंटर के ई. थॉमसन करमा को मिलने के लिए नेताजी के द्वारा पत्र भेजते हैं। साथ-ही-साथ महुआ का रंगपुर विश्वविद्यालय से स्थानांतर करके दूसरे केंद्र में स्थानांतर करने के लिए विभागध्यक्ष डॉ. मदन त्रिवेदी सहित सभी सहकर्मी कुलपति महोदय को निवेदन भेजते हैं। यहाँ भी लेखक ने पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। महुआ मुख्यमंत्री को पत्र द्वारा लानत भेजती है। जैसे की यहाँ महुआ का विभाग से स्थानांतरण करने के लिए हिंदी विभागध्यक्ष और सहकर्मी कुलपति महोदय को निवेदन पत्र भेजते हैं।

यहाँ लेखक ने पत्रात्मक शैली में विभिन्न प्रकार के पत्रों द्वारा पाठकों को परिचित किया है। साथ-ही-साथ महुआ को अपनी पूर्वघटित दर्दभरी व्यथा कहनेवाला पत्र की शैली अत्यंत गंभीर स्वरूप की लगती है। पर पठन के लिए संप्रेषणीय है।

3.6.6 मनोविश्लेषणात्मक शैली -

'हस्तक्षेप' उपन्यास में लेखक ने मनोविश्लेषणात्मक शैली का भी वर्णन किया है। जब महुआ और बिरसी भगत के बातचीत के दरम्यान बिरसी महुआ अपने बेटे करमा के लिए माँगती है तो महुआ इन्कार कर देती है। तब बिरसी अपने घर वापस गोंदली जाती है। तब महुआ का अंतर्द्वंद्व शुरू होता है। यहाँ महुआ के मनोविश्लेषणात्मक शैली का वर्णन किया है। साथ-ही-साथ महुआ से इन्कार मिलते ही और महुआ का पत्र पढ़कर करमा भगत की मानसिकता भी विचलित होती है। यहाँ महुआ और करमा भगत का मनाविश्लेषणात्मक शैली में वर्णन किया है।

3.6.7 पूर्वदीप्ति शैली -

'हस्तक्षेप' उपन्यास में पूर्वदीप्ति शैली का भी वर्णन किया है। महुआ 'आदिवासी महिला छात्रावास' की अधीक्षिका का अच्छी तरह कार्य करती है। इसलिए बिरसी भगत से उसकी पहचान हो जाती है। लेकिन बिरसी उसे एक बार ही उसके परिवार के बारे में महुआ को पूछती है तो संक्षिप्त-सा परिचय देती है। लेकिन जब करमा के लिए उसे माँगती है तब महुआ अपने पूर्व घटित जीवन की दर्दनाक कहानी पत्र के द्वारा बिरसी को कहती है। यहाँ लेखक ने पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है।

3.6.8 नाटकीय शैली -

'हस्तक्षेप' उपन्यास में लेखक ने नाटकीय शैली का भी प्रयोग किया है। यहाँ छोटे-छोटे संवादों के माध्यम से नाटकीय शैली की प्रतीती होती है। जैसे कि -

''मैने तुम्हें कष्ट देना...''

''यह भी कोई बात हुई ! इसमें कष्ट की क्या बात थी !''

रहमतअली कमरे के बाहर चले गए।

''क्या तकलीफ है आपको ?''

''डॉक्टर ने ब्रेन ट्यूमर बताया है।''

''ब्रेन ट्यूमर !''

''हाँ, ब्रेन ट्यमूर ही है। ऑपरेशन करवाना जरूरी है।''

''डॉक्टर ने ऑपरेशन के लिए कोई समय भी बताया है ?''

''जल्द-से-जल्द''

''तब तो आप बहुत बड़ी मुसीबत में फँस गए।''[1]

नेताजी बीमार होने का षड्यंत्र रचकर महुआ को करमा के माध्यम से मुकदमा वापस लेने के लिए बाध्य करना चाहते हैं। लेकिन करमा के सजगता के कारण नेताजी असफल बन जाता है। इसका वर्णन नाटकीय शैली में लेखक ने किया है। अतः लेखक ने भाषा शैली के माध्यम से सहजता, साधी सरल संप्रेषणीय भाषा शैली के माध्यम से पाठक को अभिभूत किया है। रोचक, मार्मिक, नाट्यपूर्ण भाषा का विवरण अत्यंत मनोहारी बन पड़ा है।

3.7 उद्देश्य -

उपन्यास के तत्त्वों में अंतिम तत्त्व है उद्देश्य। किसी भी रचना के पीछे लेखक एवं साहित्यकार का कोई-ना-कोई उद्देश्य होता है। कोई भी कार्य बिना उद्देश्य के सफल नहीं बनता। कार्य सिद्धी के लिए उद्देश्य होना अनिवार्य होता है। आदिवासियों को अपने हक के प्रति सचेत करता है। युग के अनुरूप आदिवासी अपने को ढालना जरूरी है। तो ही आदिवासियों का शोषण बंद हो सकता है। राजनेता लोग गैर-आदिवासी, पुलिस, विधायकजी जैसे लोगों के

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप, पृ. 210

अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए आदिवासियों को लेखक ने सचेत करने का मौलिक कार्य किया है। बुद्धिजीवी लोग भी आदिवासियों का शोषण करने में माहिर हैं। बुद्धिजीवी लोग अर्थ और धन कमाने के लिए किसी भी हद तक नीचे गिर सकते हैं। वह अर्थ और धन कमाने की उनमें होड़-सी लगती है। उसे रोकने के लिए लेखक ने महुआ और करमा के माध्यम से बुद्धिजीवी लोगों का पर्दाफाश किया है। राजनीतिज्ञ लोग सेवा, संस्कृति, कल्याण, विकास के नाम पर आदिवासियों का शोषण करते हैं। उन्हें रोकने के लिए आदिवासियों को जागृत करने का प्रयास किया है। अक्सर आदिवासी युवतियों का दैहिक, शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण संस्कृति के नाम पर यह लोग लेते हैं। उसे रोकने का उद्देश्य लेखक का यहाँ दिखाई देता है। आदिवासी निर्धन, अनपढ़, दुर्बल, अभावग्रस्त, शोषित एवं दमित होने के कारण वे राजनीति एवं बुद्धिजीवी लोगों ने आदिवासी को माल समझकर उसका संस्कृति, सेवा के नाम पर नाजायज फायदा उठाते हैं। आदिवासी अज्ञानी होने के कारण उसका विरोध नहीं करते। परंतु अब करमा जैसे लोग शिक्षित होकर उनमें चेतना जाग्रत हो रही है। अपने हक के प्रति आदिवासी भी सजग दिखाई देते हैं। रैली, आर्थिक बंद, नाकेबंदी के नाम पर भूखे प्यासे आदिवासियों को जुलूस के रूप में लाकर राजनीति लोग अपना स्वार्थ साधने में माहिर हैं। बलात्कार से पीड़ित आदिवासी महिला एवं युवती उसका प्रतिशोध न लेकर डॉ. सीमा जैसे लोगों के जाल में फँस कर गलत रिपोर्ट लिखवाकर मामले को रफा-दफा किया जाता है। बलात्कार से पीड़ित युवती हो या महिला का पहले शारीरिक शोषण होता है और पुलिस तथा डॉ. सीमा जैसे लोग आर्थिक शोषण करने में माहिर हैं। उससे पीड़िता को समाज में उसे वांछित करके उसकी मानसिक प्रताड़ना करते हैं। न कि उसे संरक्षण देने को कोई तैयार नहीं होता। लेखक ने मीडिया एवं संवाददाताओं का भी विरोध किया है। मीडिया एवं संवाददाता ऐसे-ऐसे चित्र उतारने की ताक में होते हैं कि जिससे उनको आर्थिक लाभ हो सके। हस्तक्षेप के द्वारा यदि अनेक उद्देश्य लेखक ने बताकर आदिवासी को सजग करके उनमें चेतना लाने का महत्त्वपूर्ण कार्य लेखक ने प्रस्तुत किया है।

3.8 शीर्षक की सार्थकता -

'हस्तक्षेप' दूसरों के जीवनयापन में रूकावटें पैदा करना, दखलअंदाजी करना, किसी के चलते काम में बाधाएँ उत्पन्न करना, अडचने उत्पन्न करना, काम को रोकना, हेर-फेर

करना, दूसरों के काम में हस्तक्षेप करके काम को बाधित करना, आदिवासियों के दैनंदिन जीवन में हस्तक्षेप करके उच्छृंखलित किया है। आदिवासियों के नैसर्गिक जीवनयापन में नेताजी, विधायक जी, रहमतअली जैसे लोग हस्तक्षेप करके अस्त-व्यस्त बनाते हैं। आदिवासियों का जीवन यातनामय बनाने के लिए जिम्मेदार यह राजनेता लोग ही हैं। महुआ को आदिवासी लड़कियों के प्रति आत्मीयता होने के कारण सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर बंदी लगाती है। वह अपना कार्य कर्तव्य निष्ठा से आदर्शों एवं अपने सिद्धांतों के द्वारा चलाती है। लेकिन महुआ के कर्तव्यनिष्ठा में नेताओं का हस्तक्षेप करते दिखाई देते हैं। आदिवासियों के विकास के लिए सरकार द्वारा चलाई गई योजनेताओं का लाभ उठाने के लिए नेताओं का हस्तक्षेप करते हैं। यह भी शीर्षक की सार्थकता हो सकती है। आदिवासियों के सांस्कृतिक वातावरण को दूषित बनाने में जिम्मेदार यह तथाकथित राजनेताओं का हस्तक्षेप भी हुआ है। करमा भगत आदिवासियों का सच्चा सेवक है। लेकिन राजनेता लोगों ने हस्तक्षेप करके उसे उसका इस्तेमाल करने का षड्यंत्र भी रचते हैं। लेकिन करमा की सजगता के कारण ऐसा नहीं हो पाता। प्रजातांत्रिक भारत में कानून की व्यवस्था में भी राजनेताओं के हस्तक्षेप के कारण आदिवासी लोगों को न्याय नहीं मिलता। इसका यथार्थ चित्रण भी किया है। शिक्षा जैसे पवित्र क्षत्र में भी राजनेताओं ने हस्तक्षेप करके उसको अपवित्र बना दिया है। विश्वविद्यालयीन मतलब शिक्षा व्यवस्था में नेताओं का हस्तक्षेप करके उसे रुपए कमाने का धंधा बनाया है। इस तरह अनेक बातों से शीर्षक की सार्थकता सिद्ध जाती है।

निष्कर्ष -

'हस्तक्षेप' उपन्यास तत्त्वों के आधार पर उसकी समीक्षा करते समय सफलतम कृति बन गई है। श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने 'हस्तक्षेप' नाम को भी सार्थक बना दिया है। आदिवासी लोगों का जीवन अभावग्रस्त शोषित एवं दमित होने के कारण उनके जीवन में आत्मसम्मान जाग्रत करने का प्रयास किया है। उपन्यास की कथावस्तु रोचक एवं पठनीय है। मुख्य कथावस्तु को रोचक बनाने में प्रासंगिक कथावस्तु भी महत्त्वपूर्ण बन पड़ी है। उपन्यास की कथावस्तु पढ़ते समय आगे पढ़ने की मन में उत्कंट इच्छा पैदा होती है। कहीं-कहीं कथावस्तु बोझिल भी बन गई है। लेकिन इससे कथावस्तु को कोई हानि नहीं पहुँचती है। लेखक ने कथावस्तु मौलिक भाषा में प्रस्तुत की है, इसलिए पाठक प्रभावी बन जाता है। पात्र एवं चरित्र-चित्रण में भी लेखक ने प्रमुख पात्र एवं

गौण पात्रों के द्वारा अपने मौलिक विचार आदिवासियों के बारे में पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। करमा भगत, महुआ चक्रवर्ती और बिरसी भगत यह प्रमुख पात्रों के द्वारा लेखक ने अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किए हैं। लेकिन यहाँ लेखक ने महुआ को यदि आदिवासी पात्र बनाते तो उपन्यास और अधिक बढ़िया बन जाता, लकिन लेखक ने ऐसा क्यों नहीं किया यह सवाल मेरे मन में बार-बार पैदा होता है। गौण पात्र भी लेखक ने अच्छी तरह उनको चित्रित करने में सफल दिखाई देते हैं। कथोपकथन के माध्यम से लेखक ने उपन्यास को संप्रेषणीय एवं रोचक बना दिया है। लेखक ने यहाँ छोटे-छोटे संवाद, आवेशात्मक संवाद, उपदेशात्मक संवाद, हास्य-व्यंग्यपूर्ण संवाद, भावात्मक संवाद, तर्कपूर्ण संवाद एवं बड़े-बड़े संवादों का भी वर्णन किया है। संवाद एवं कथोपकथन उनका महत्त्वपूर्ण बन गया है। लेकिन जहाँ बड़े-बड़े संवादों याने कानून की कारवाई के दरम्यान वकील की बहस के संवाद से पाठक ऊब जाता है। फिर भी कथोपकथन एवं संवाद रोचक एवं मौलिक ढंग से लेखक ने यहाँ प्रस्तुत किया है। देश-काल, वातावरण का चित्रण करते समय लेखक ने प्राकृतिक वर्णन, राजनीतिक वर्णन, सांस्कृतिक वर्णन एवं सामाजिक वातावरण का वर्णन भी रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। यहाँ एक बात अखर जाती है कि प्राकृतिक वर्णन में आदिवासियों का रहन-सहन, रीति-रिवाज, लोककथा एवं परंपराओं का वर्णन न करके सिर्फ अपने उराँव जाति का उल्लेख किया है। ऐसा क्यों किया है ? साथ-ही-साथ आदिवासियों के जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी कम ही मिलती है। ज्यादातर राजनीतिज्ञ गैर-आदिवासी लोगों का वर्णन यहाँ दिखाई देता है। भाषा शैली भी लेखक ने अत्यंत रोचक एवं मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। भाषा के अंतर्गत लेखक ने संस्कृत, तत्सम, तद्भव, अंग्रेजी, लोकोक्तियाँ, मुहावरें एवं आदिवासी गीत, फिल्मी गीत और आरती का भी प्रयोग यहाँ हुआ है। लेखक ने इन शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। लेखक ने यहाँ ज्यादातर एक-एक शब्दों का भी प्रयोग दिखाया है। भाषा पढ़ने में सहज, सरल एवं संप्रेषणीय है। इनकी भाषा मौलिक एवं मार्मिक बन पड़ी है। शैली का भी प्रयोग 'हस्तक्षेप' में किया है। यहाँ लेखक ने आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, नाटकीय शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली आदि अनेक शैलियों का लेखक ने प्रयोग किया है। उनकी शैली भी मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने 'हस्तक्षेप' शीर्षकता उनके उद्देश्य से स्पष्ट होती है। आदिवासी लोगों का जीवन राजनेता, पुलिस, नेताजी, विधायक जी, गैर-आदिवासी आदि लोगों ने बहुत पीड़ादायक बना दिया है। आदिवासियों में आत्मसम्मान जाग्रत करके उनको अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देना इसका मूल उद्देश्य यहाँ दिखाई देता है। लेखक ने यहाँ आदिवासी लोगों के प्रति आत्मीयता दिखाते हुए उनका शोषण रोकने के लिए उनमें चेतना जगाने का प्रयास पात्रों के माध्यम से किया है। आदिवासी जीवन के विकास के नाम पर चल रहे शोषण के विरूद्ध 'हस्तक्षेप' करना हो या बलात्कार से पीड़ित महिलाओं का अंतर्द्वंद्व अधिक यथार्थ एवं सहज प्रतीत होता है। कथ्य के संप्रेषण में उपन्यासकार की सफलता इस कृति को और अधिक सार्थक बना देती है। यही इस उपन्यास का मूल प्रतिपाद्य है।